सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 10 ● अंक: 250 ● पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, गुरुवार, 17 अक्टूबर, 2024

मूल्य ₹ 3/-

मंजिल को पाने की दिशा में आगे बढ़ते हुए याद रहे कि मंजिल की ओर बढ़ता रास्ता भी उतना ही नेक हो।

-डॉ. राजेंद्र प्रसाद

पहले टेस्ट में भारतीय बल्लेबाजी... 7 | क्यों फिसली कांग्रेस के हाथ... 3 | प्रियंका गांधी पर दिये बयान... 2

बहराइच की घटना में अब कौन आग में घी डालने का कर रहा है काम ?

जो घरों को छोड़कर नहीं गए हैं उनके अंदर ऐसा डर भरा है मानों किसी भी समय कुछ भी हो सकता है!

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के बहराइच जिले के हालात अब शांत हो गए हैं और ये ऐसे शांत हुए कि अब पूरे इलाके में सन्नाटा फैल गया। लोग अपने घर छोड़कर चले गए हैं। कई घरों में ताले लटके हैं। कस्बे की सड़कों पर जली हुई गाड़ियों का मलबा पड़ा हुआ है। जिन दुकानों-घरों और शोरुम में आगजनी की गई स्थितियां वहां की वैसी ही बनी हुई हैं। उस इलाके से रौनक खत्म हो गई, जहां एक समय अच्छी खासी चहल-पहल होती थी, सड़कों पर वाहन दौड़ते थे, सड़क चौराहे से लेकर गलियों में खूबसूरत माहौल होता था, वो क्षेत्र आज विरान हो गए। वहां सन्नाटा पसरा हुआ है। जो घरों को छोड़कर नहीं गए हैं वो घरों में दुबके बैठे हैं, उनके अंदर ऐसा डर भरा है मानों किसी भी समय कुछ भी हो सकता है। किसी-किसी को अभी भी डर है कि माहौल कभी भी बिगड़ सकता है। उनकों डर कि कहीं फिर से वो भीड़ वापस न आ जाए और फिर तांडव मचाने लगे... उनके अंदर डर है कि कहीं प्रशासन के लोग न आ जाए और किसी को भी उठा ले जाएं... इसलिए लोग मीडिया से भी बोलने को कतरा रहे हैं... बहराइच के महसी इलाके में अजीब सा सन्नाटा है और लोगों के दिल पर गहरी चोट लगी है ये तो बहराइच का हाल है

लेकिन दूसरी तरफ इस मामले में पूरे देश में सियासत जारी है... सियासी नेता इस पर रोटियां सेंक रहे हैं और गोदी मीडिया नफरत फैलाकर एक बार फिर से बहराइच में माहौल को गर्म करने की साजिश कर रहे हैं.. आज हम इन सभी गोदी मीडिया की परते खोलेंगे जिन्होंने देश में एक समुदाय विशेष के खिलाफ नफरत का बीज बोने की कोशिश की है। जिनका दिन रात सिर्फ एक काम है दो धर्मों के खिलाफ नफरत फैलाना... एक दूसरे के प्रति हिंसा की भावना को पैदा करना... ये लोग बहराइच हिंसा की आग में और घी डालने की पूरी कोशिश कर रहे हैं, लेकिन इनके इरादों को यूपी पुलिस ने नाकाम कर दिया। यूपी पुलिस ने इस तरह की ख़बरों का खंडन करते हुए लिखा कि सोशल मीडिया और मीडिया पर भ्रामक ख़बरें फैलाई जा रही हैं। जिसमें मृतक को करंट लगाना, तलवार से मारना और नाखून उखाड़ने जैसी बातें कही जा रही है जो बिलकुल बेबुनियाद हैं और भ्रामक हैं कृपया आप सबसे अनुरोध है कि इस तरह की भ्रामक ख़बरें न फैलाएं।

हरदी थानाध्यक्ष के मुताबिक इस घटना के बाद भारतीय न्याय संहिता की धारा 191(2)191(3)190 और 103(2) के तहत महराजगंज निवासी अब्दुल हमीद, सरफ़राज़ फ़हीम, साहिर ख़ान और ननकऊ वर्मा रूप अली के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर दिया। बस इसी घटना के बाद से स्थिति बेकाबू हो गई और दोनों पक्षों की तरफ से पथराव शुरू हो गया। यह घटना बहराइच जिले की है जहां के स्थानीय बीजेपी विधायक सुरेश सिंह का कहना है कि भड़काऊ गाना नहीं बजाया गया था, बल्कि वह गाना पाकिस्तान के खिलाफ था। एफआईआर के मुताबिक राम गोपाल मिश्रा जब अब्दुल हामिद के घर में सीढ़ियों से उतर रहे थे, तभी अब्दुल हामिद ने गोली चली दी और राम गोपाल मिश्रा की मौत हो गई।

रविवार की घटना के बाद प्रशासन ने किसी तरह से मूर्ति विसर्जन करा दिया लेकिन प्रशासन को लगा अब मामला ठीक हो जाएगा और हालात सामान्य हो गए हैं लेकिन सोमवार को युवक की मौत की खबर के बाद हालात एक बार फिर बिगड़ गए। सोमवार को तड़के क़रीब तीन बजे राम गोपाल मिश्रा का शव उनके गांव आया, जिसके बाद गांव के आसपास लोगों की भीड़ बढ़ने लगी और फिर धीरे धीरे लोग शव को लेकर महसी तहसील आए और धरना शुरु कर दिया। मृतक के परिजन अंतिम संस्कार न करने पर अड़ गए जिसके बाद बीजेपी विधायक सुरेश्वर सिंह ने लोगों को समझा बुझाकर शांत किया और मृतक के शव का अंतिम संस्कार कराया। मृतक के शव को अंतिम संस्कार के लिए ले जाए जाने के बाद भीड़ एकाएक उग्र हो गई और सड़क पर उतर आई और फिर भीड़ ने मुसलमानों के घरों को निशाना बना लिया और जमकर उपद्रव शुरु कर दिया। देखते ही देखते कई घर जला दिए गए, मुसलमानों की दुकानों को भी निशाना बनाया गया। महाराजगंज के आसपास के कुछ इलाकों में हिंसा फैल गई।

इनकी ही सरकार के पहले डीजीपी ने कहा ये एनकाउंटर नहीं हत्या है: अखिलेश यादव

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बीजेपी पर हमला बोलते हुए कहा कि ये घटना हुई नहीं है ये घटना कराई गई है, कराए जाने के लिए दोषी कौन होगा ? देश का सभी पत्रकार जानता है कि ये घटना रोकी जा सकती थी लेकिन इसमें आग घी डालने का काम कर रहे हैं.... इन्होंने बीजेपी के कामों को बिगाड़ दिया, हमने उत्तर प्रदेश की पुलिस को बेहतर करने के लिए बेहतर चीजें दी थी.. लेकिन इस सरकार ने इस पुलिस को बिगाड़ दिया। अखिलेश यादव ने कहा इसी सरकार के सबसे पहले डीजीपी जो इन्हीं की सरकार में डीजीपी थे उन्होंने कहा जो आए एनकाउंट कर रहे हैं कल उनके साथ कोई खड़ा नहीं दिखाई देगा। उन्होंने सोचिए जो इनकी ही सरकार के पहले डीजीपी हों वो ही इन पर सवाल खड़े कर रहे हैं कि ये जितने भी एनकाउंटर हो रहे हैं ये एनकाउंटर नहीं हैं। ये हत्या हो रही हैं और एक दिन ऐसा आएगा जब इनके साथ कोई खड़ा नहीं होगा। वहीं इस घटना का जिसने वीडियो वायरल किया उस पत्रकार को बीजेपी के लोगों ने बहुत मारा है।

पीएम रिपोर्ट ने निकाल दी टीवी चैनलों के दावों की हवा

आप को जानकार हैरानी होगी कि युवक की पोस्टमार्टम की रिपोर्ट आने के पहले टीवी चैनलों पर रात से ही प्रसारित किया जा रहा था कि बहराइच हिंसा में मारे गए मृतक रामगोपाल के साथ आरोपियों ने जमकर बर्बरता की। आरोपियों ने मृतक के पैरों के नाखून निकाल लिए, मृतक को करंट लगाया गया... कई चैनलों ने इसे अपने प्राइम टाइम में चलाकर देश में एक वर्ग के खिलाफ जमकर आग लगाने की कोशिश की, एक समुदाय विशेष के खिलाफ जमकर झूठ परोसा गया। प्रदेश से लेकर पूरे देश में भ्रामक ख़बर को फैलाया। लेकिन आखिर यों ये झूठ चिल्ला-चिल्लाकर जनता के सामने परोसा गया या एक बार फिर बहराइच जैसी आग पूरे देश में ये मीडिया फैलाना चाहता है। बिना तथ्यों के कैसे कोई बड़ा चैनल इस तरह की ख़बरों को अपने-अपने प्लेटफॉर्म पर चला सकता है।

पुलिस ने दी चेतावनी

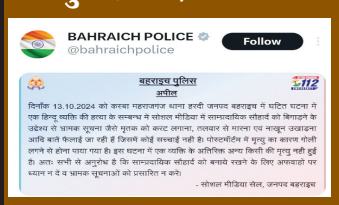

यूपी पुलिस ने तो साफ कहा कि इस तरह से अफवाह फैलाने वालों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी लेकिन ये भी तय कि किसी मीडिया चैनल पर कोई कार्रवाई नहीं होगी। और न ही कोई चैनल अपने इस गलत कृत्य को लेकर टीवी चैनल पर आकर माफी मांगेगा। ये घटना शर्मनाक थी और इस तरह की घटना में मारे गए युवक के परिवार को इंसाफ भी मिलना चाहिए लेकिन इस तरह से जो नफरत फैला रहे हैं वो भी कितना जायज है ये भी आप तय कीजिए ।

हिंसा के आरोपियों के साथ पुलिस की मुठभेड़,पांच गिरतार

बहराइच के महाराजगंज में हुए हत्याकांड के दो मुय आरोपियों की पुलिस से मुठभेड़ हो गई, जिसमें दोनों आरोपी घायल हो गए हैं। उनके पैरों में गोली लगी है। मुठभेड़ नानपारा कोतवाली के बायपास पर हुई। आरोपी नेपाल भागने की फिराक में था। हांडा बसेहरी नहर के पास का मामला है। पुलिस के अनुसार गिरतार 5 आरोपियों में तीन नामजद आरोपी हैं, जिनमें मोहम्द फहीन, मोहम्द सरफराज और अदुल हमीद शामिल हैं। इनके अलावा मोहमद तालीम उर्फ़ सबलू और मोहमद अफ़ज़ल की गिरतारी हुई है। पुलिस के अनुसार आरोपियों को मर्डर में प्रयुक्त हुए हथियार की बरामदगी के लिए जब पुलिस टीम लेकर गई तो इनके द्वारा वहां रखे हथियारों से पुलिस पर फायरिंग की गई। जवाबी फायरिंग में दोनों को गोली लगी है। गंभीर रूप से घायल हुए हैं। उपचार कराया जा रहा है। मर्डर में उपयोग किया हथियार बरामद हो गया है।

प्रियंका गांधी पर दिये बयान से गुस्साए कांग्रेसी, मंत्री के गेट पर पोती कालिख

» कांग्रेसी नेता अनिल यादव ने मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के बंगले के गेट पर लिखा चोर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के एक पोस्ट के बाद सूबे की राजनीति गरमा गई है। पुराने कांग्रेसी और मौजूदा समय में बीजेपी सरकार में मंत्री दिनेश सिंह ने कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी को लेकर विवादित पोस्ट कर दिया। जिसके बाद कांग्रेस के नेताओं ने दिनेश सिंह पर जमकर हमला बोल दिया है। रायबरेली से लोकसभा चुनाव लड़ चुके मंत्री दिनेश सिंह के बंगले के गेट पर कांग्रेस नेता अनिल यादव ने कालिख पोतते हुए चोर और बेईमान लिख दिया है। हालांकि इसके कुछ ही देर बाद उस कालिख पर पेंट कर दिया गया है।

फोटो: सुमित कुमार

दरअसल केरल की वायनाड सीट से राहुल गांधी के इस्तीफा देने के बाद वायनाड सीट पर उपचुनाव होने जा रहा है। कांग्रेस ने इस सीट से कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी को उम्मीदवार घोषित किया है। प्रियंका पहली बार किसी चुनाव में खुद ताल ठोक रही हैं। यूपी सरकार में मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने प्रियंका गांधी को लेकर अपमानजनक टिप्पणी कर दी है। दिनेश ने पोस्ट करते हुए लिखा कि अन्ततः लड़की लड़ नहीं पाई और भाग ही गई वहां जहां लड़ना न पड़े। बूढ़ी जो हो गई।

योगी सरकार में मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के इस पोस्ट के बाद यूपी कांग्रेस अध्यक्ष से लेकर तमाम कांग्रेस नेताओं ने दिनेश प्रताप सिंह पर हमलों की बौछार कर दी है। इसी क्रम में यूपी कांग्रेस के संगठन महासचिव अनिल यादव लखनऊ के गौतमपल्ली स्थित मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के सरकारी आवास पर पहुंच गए और आवास पर लगी नेम प्लेट पर कालिख पोत दी। इसके साथ ही गेट पर चोर और बेईमान लिख दिया है। इस दौरान दिनेश प्रताप सिंह मुर्दाबाद के नारे भी लगाए गए।

कांग्रेस नेता अनिल यादव ने कहा कि हमारी नेता के खिलाफ अगर कोई गलत बयानबाजी करेगा तो हम बर्दाश्त नहीं करेंगे। दिनेश सिंह की औकात है तो स?क पर आए, निपट लेंगे। इसका वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। अनिल ने कहा कि यदि उनके अंदर हिम्मत है तो सड़क पर आकर जवाब दें। उन्होंने कहा कि हम महिलाओं के खिलाफ अभद्र भाषा का इस्तेमाल बर्दाश्त नहीं करेंगे।

जम्मू कश्मीर से नहीं मिटेगी 370 की लकीर: बृजभूषण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोंडा। भाजपा के पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने कहा है कि 370 पत्थर की ऐसी लकीर है जिसे कोई मिटा नहीं सकता है। जो लोग 370 वापस लाने का वादा कर रहे हैं वो कश्मीर की जनता से धोखा कर रहे हैं। किसी में इतना दम नहीं है कि वो 370 वापस ला सके।

वहीं, यूपी में उपचुनाव को लेकर उन्होंने कहा कि कुछ सीटें भाजपा के पास हैं तो कुछ सीटें विपक्ष के पास हैं लेकिन माहौल भाजपा के पक्ष में है। हरियाणा में नायब सिंह सैनी को मुख्यमंत्री बनाए जाने के सवाल पर उन्होंने कहा कि उन्हें ही मुख्यमंत्री बनना चाहिए। हरियाणा की जनता ने उन्हें देखकर ही वोट किया है। बहराइच में हुई हिंसा पर उन्होंने कहा कि मैं तो दोनों पक्षों के लोगों से यही कहूंगा कि हिंदू और मुसलमान दोनों को यहीं पर एक साथ रहना है। दोनों को मिलजुलकर यहीं रहना चाहिए। गलती अगर किसी ने की है तो उसको प्रशासन देखेगा। दोनों वर्गों को शांति बनाए रखनी चाहिए।

सीट-शेयरिंग मामले में सीएम शिंदे बलिदान देने को रहें तैयार: बावनकुले

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र भाजपा के प्रमुख चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा कि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को विधानसभा चुनावों के लिए सीट-शेयरिंग के मामले में बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए, जैसा कि भाजपा ने गठबंधन बनाए रखने के लिए दिया है। बावनकुले का यह बयान उस समय आया है, जब चुनाव आयोग ने राज्य विधानसभा की 288 सीटों के लिए चुनावी कार्यक्रम घोषित किया है। मतदान 20 नवंबर को होगा और नतीजे 23 नवंबर को आएंगे।

बावनकुले ने नागपुर में एक मराठी समाचार चैनल से बातचीत में कहा, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को खुले विचार रखकर बलिदान देने के लिए तैयार रहना चाहिए। हमने भी गठबंधन को बनाए रखने के लिए बलिदान दिया है। यह स्पष्ट है कि भाजपा उन सीटों पर चुनाव लड़ना चाहती है, जो पहले उसके पास थीं।

उन्होंने कहा कि यह स्वाभाविक है कि गठबंधन में प्रमुख दल होने के नाते भाजपा अधिक सीटों की मांग करे। यह पूछे जाने पर कि क्या केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने कहा है कि भाजपा, शिवसेना (मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली पार्टी) के साथ गठबंधन करते समय मुख्यमंत्री का पद छोड़े, बावनकुले ने कहा, मुझे नहीं पता कि गृह मंत्री शाह ने शिंदे से क्या कहा। यह सही है कि मुख्यमंत्री सबसे ऊंचा पद होता है और यह सरकार का प्रतिनिधित्व करता है।

उन्होंने पत्रकारों से कहा, आम कार्यकर्ता मानते हैं कि भले ही मुख्यमंत्री का एकनाथ शिंदे के पास हो, भाजपा के पास ज्यादा विधायक हैं। निगम और मंत्री पद भाजपा के पास होने चाहिए। बावनकुले ने कहा कि उन्होंने शिंदे से अनुरोध किया है कि भाजपा एक बड़े दल के रूप में अधिक सीटों पर चुनाव लड़ने का अधिकार रखती है। उन्होंने कहा, यह तय करना आसान नहीं है कि किसने अधिक बलिदान दिया।

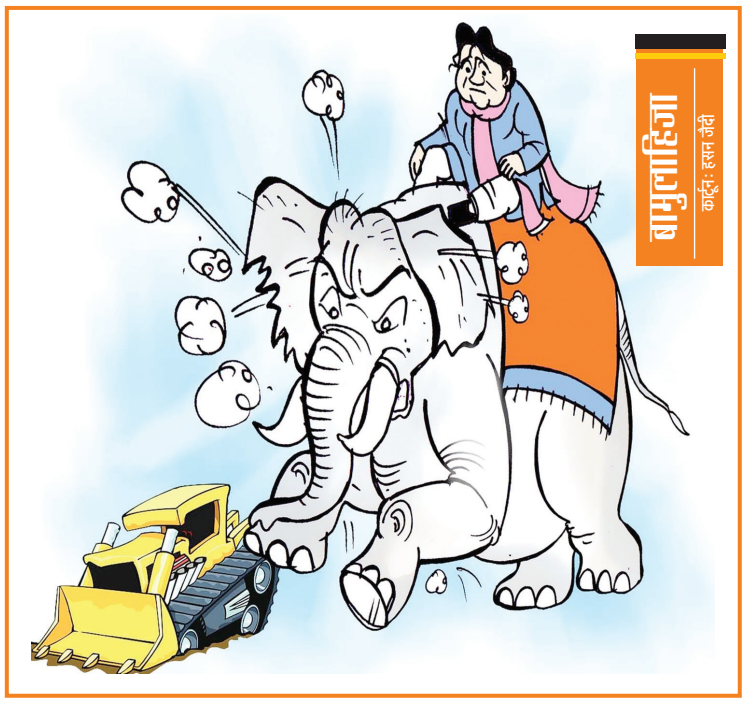

महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में मनसे किसी के साथ नहीं करेगी गठबंधन: राज ठाकरे

राज ठाकरे ने शिंदे सरकार के फैसले का किया स्वागत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना प्रमुख राज ठाकरे ने बुधवार को कहा कि उनकी पार्टी महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव बिना किसी गठबंधन के अपने दम पर लड़ेगी। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) के प्रमुख ने 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उम्मीदवारी का समर्थन किया था और राज्यों में भाजपा के नेतृत्व वाली महायुति के उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया था।

पत्रकारों से बातचीत के दौरान राज ठाकरे ने कहा कि मनसे विधानसभा चुनाव स्वतंत्र रूप से लड़ेगी और कहा कि वे किसी भी अन्य पार्टी की तुलना में अधिक सीटों पर चुनाव लड़ेंगे। राज ठाकरे ने कहा, हम पूरे जोश के साथ चुनाव लड़ेंगे और विधानसभा चुनाव के बाद मनसे सरकार में होगी। मनसे सभी राजनीतिक दलों में सबसे अधिक सीटों पर चुनाव लड़ेगी।

हालांकि इस दौरान उन्होंने मुंबई के पांच प्रवेश बिंदुओं पर टोल माफ करने के राज्य सरकार के फैसले का भी स्वागत किया और कहा कि उनकी पार्टी कई वर्षों से इसके लिए अभियान चला रही है। अविभाजित शिवसेना से अलग होकर 2006 में मनसे की स्थापना करने वाले राज ठाकरे ने 2014 में प्रधानमंत्री पद के लिए मोदी की उम्मीदवारी का खुलकर समर्थन किया था। लेकिन फिर उन्होंने अपना रुख बदल लिया और उनके कटु आलोचक बन गए। उन्होंने मोदी की रैलियों में उनकी तरफ से किए गए वादों के वीडियो चलाकर यह भी बताया कि वे वादे कैसे पूरे नहीं हुए।

पिछले दो चुनावों में मात्र एक-एक सीट जीती थी मनसे

राज्य की 288 विधानसभा सीटों में से मनसे ने 2014 और 2019 के चुनावों में एक-एक सीट जीती थी। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को एक ही चरण में मतदान होगा और 23 नवंबर को मतों की गिनती होगी। विधानसभा चुनाव मुख्य रूप से भाजपा, एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना और अजीत पवार की एनसीपी के सत्तारूढ़ महायुति गठबंधन और कांग्रेस, उद्धव ठाकरे की शिवसेना (यूबीटी) और शरद पवार की एनसीपी (एसपी) से मिलकर बने विपक्षी ब्लॉक महा विकास अघाड़ी (एमवीएस) के बीच मुकाबला होगा।

भाजपा ने बीस सालों में सिर्फ झारखंड को लूटा है: हेमंत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर तीखा हमला करते हुए झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि पार्टी ने 20 वर्षों से अधिक समय तक राज्य को लूटा है। सोरेन ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि दिसंबर 2019 में झारखंड की महान जनता के आशीर्वाद से मैंने राज्य की बागडोर संभाली। मेरा एकमात्र उद्देश्य झारखंड के पेड़ को सींचना और उसकी जड़ों को मजबूत करना था। उन्होंने कहा कि भाजपा ने इस पेड़ को 20 साल तक दोनों हाथों से लूटा। इसने उसे सुखा दिया था।

हेमंत सोरेन ने जेल से बाहर रहने और फिर से सीएम के रूप में कार्यभार संभालने के 100 दिन पूरे होने पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज उन्हें जेल से वापस आकर राज्य की कमान संभाले 100 दिन हो गए हैं। साथ ही कल चुनाव आयोग ने झारखंड में विधानसभा चुनाव की घोषणा कर दी। झारखंड मुक्ति मोर्चा (जेएमएम) ने आगे बीजेपी की आलोचना की और दावा किया कि 20 साल तक पार्टी ने लोगों को शिक्षा और रोजगार जैसी बुनियादी चीजों से वंचित रखने की कोशिश की है।

क्यों फिसली कांग्रेस के हाथ से सत्ता?

जनता के मतों की सुरक्षा में बार-बार फिसड्डी साबित हो रही कांग्रेस

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। चुनाव आयोग पर तोहमत मढ़ने का कृत्य जारी रहेगा, अप्रत्याशित हार से मिले ज़ख्म की पीड़ा जो छिपानी है। अकर्मण्यों की गिरोह में घिरे राहुल गांधी क्या कांग्रेस को आंतरिक आरएसएस के घुसपैठियों से मुक्त करा पायेंगे? अब जनता संशय की स्थिति में खड़ी हो गई है, उसके मन में प्रश्न कौंध रहे हैं आखिर वह कांग्रेस को वोट दे क्यों? तमाम मुसीबतों, स्थानीय स्तर पर वैर व बाधाओं को पार कर वह अपने मत का प्रयोग इस उद्देश्य से करता है कि निष्ठुर सरकार से पिंड छूट सके परन्तु कांग्रेस उनके मतों की हिफाजत में विफल रहती है। एक दो बार नही कांग्रेस जनता के मतों की सुरक्षा में बार-बार फिसड्डी साबित हो रही है।

> तर्क गढ़े जा सकते हैं, मल्लिकार्जुन खड़गे को कांग्रेस ने अपना राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया है, आपका आभार! परन्तु क्या खड़गे साहब को पार्टी ने निर्णय लेने की स्वतंत्रता भी दी है? यदि हां तो पार्टी का राष्ट्रीय अध्यक्ष उसका नेता होता है फिर राहुल गांधी हर निर्णय में अगुवाई करते हुए क्यों दिखते हैं? देश की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू का प्रधान मंत्री द्वारा होता अपमान लोगों को अप्रिय महसूस होता है लेकिन राहुल गांधी, प्रियंका गांधी द्वारा खड़गे साहब कि की जाने वाली अवहेलना क्यों नहीं दिखती? कांग्रेस में वर्तमान में मुसलमानों का नेता कौन है जिसे पूरा देश पहचानता हो? यदि ईवीएम मशीन और चुनाव आयोग में राहुल गांधी को अविश्वास है तो इन दोनों के खिलाफ़ चलाएं पूरे देश में अभियान। शुरू करें नई यात्रा; लोकतंत्र के सम्मान में राहुल गांधी मैदान में। चरित्र हीन ईवीएम और बेईमान चुनाव आयोग का बहिष्कार हो!

जनता कांग्रेस के पक्ष में अपना जनादेश सुनाती है लेकिन चुनावी परिणाम आने के बाद वही जनादेश बीजेपी के पक्ष में दिखता है। परिणामोपरांत प्रत्येक कांग्रेसी नेता बन्दर की भांति इस डाल से उस डाल तक उछल कूद करने लगता है। परिणाम आने के बाद ही उन्हें भान होता है कि केंचुआ (केंद्रीय चुनाव आयोग) बेईमान है, लोकतंत्र की हत्या कर रहा है। परिणाम से पहले वह जाने किस मेलाटोनिन की गोली खाकर चिर निद्रा में सोए रहते हैं। जनता के मतों को इज्जत मिले, उसके जनादेश को सही तरीके से रेखांकित किया जा सके मूल्यांकन हो, यह नैतिक जिम्मेदारी कांग्रेस के कंधों पर थी। अफसोस! इतना कमजोर कंधा कांग्रेस का होगा कि हाथ सहित उखड़ जायेगा किसी ने सोचा भी नही था। यकीनन हर कांग्रेसी ईवीएम मशीन और चुनाव आयोग को बेईमान साबित करेगा। हम यह प्रमाणित कतई नही कर रहे हैं कि यह दोनों बड़े ही चरित्रवान हैं। इनके सतीत्व पर अंगुली नहीं उठाई जा सकती। ईवीएम और चुनाव आयोग पर बदचलन होने के आरोप तब भी लगे थे जब कांग्रेस ने 2009 लोकसभा चुनाव जीता था। घटना उद्धृत करने का आशय सिर्फ इतना ही है कि जब ईवीएम को भस्मासुर बनाया जा रहा था तब क्या इस भस्मासुर से बचाव का कोई मार्ग नही तलाशा गया? यदि बचाव का मार्ग है तब क्या वह मंत्र ईवीएम मैय्या वर दे, सीएम, पीएम की कुर्सी मेरी झोली में धर दे जिन्हें मालूम है, वह कांग्रेस के टुकड़ों पर पलते हुए भी स्वत: के दल के खिलाफ बीजेपी की मदद कर रहे हैं? भस्मासुर को मारने का फॉर्मूला किसी के साथ शेयर करने को क्या वह राजी नहीं है? दिल गवाही नही दे सकता है कि स्वीकार किया जाए कि जो तकनीक प्रयोग में लाई जा रही है यदि उसका परिणाम प्रतिकूल रहा तो बचाव कैसे किया जा सकता है, इस बिन्दु पर विचार ही नहीं किया गया होगा। सात अक्टूबर 24 को जयराम रमेश चीख चिल्ला रहे थे कि बीजेपी जम्मू कश्मीर के चुनाव परिणाम को बदलना चाहती है। वह भूल गए कि बीजेपी जम्मू कश्मीर के चुनाव परिणाम को क्यों प्रभावित करेगी? जब की विपक्ष की जीत से उसे दो लाभ होने वाला है, पहला यह कि जम्मू कश्मीर में चाहे जिसकी सरकार बने बागडोर उसके ही हाथ रहनी है। वहां अप्रत्यक्ष रूप से बीजेपी की ही सरकार होगी। ज्यादातर शक्तियां उप राज्यपाल के पास होगी, अप्रत्यक्ष सरकार ही वहां प्रभावशाली भूमिका निभायेगी। दूसरी यह कि वैश्विक कूटनीति उन्हें प्रमाण पत्र जारी कर रही होगी कि जम्मू कश्मीर में स्वस्थ लोकतंत्र बहाल करने में मोदी सरकार ने बड़ी उपलब्धि हासिल कर ली है। चुंकि एग्जिट पोल के सारे मदारियों ने एक सुर से सुर मिलाकर हरियाणा में कांग्रेस को बहुमत दिला दी तो कांग्रेसी हो गए फूल के गुब्बारा। हाइड्रोजन गैस भरे गुब्बारे जैसे लगे उड़ने। उन्हें ख्याल क्यों नहीं आया कि जब भी किसी शातिर को ए पर हमला करना होता है तब वह ध्यान भटकाने के लिए बी को धमकाना शुरू कर देता है ताकि सभी का ध्यान बी की तरफ लग जाय और लोग ए से उदासीन हो जाएं, उन्हें लूट का निर्विरोध अवसर हासिल हो जाए।

तीन राज्यों की हार से भी कांग्रेस ने कोई सबक नहीं सीखा

कर्नाटक चुनाव में कांग्रेस ने विजय हासिल किया क्योंकि वहां की रणनीति में बदलाव किया गया सिद्धारमैया को पूरी स्वतंत्रता नहीं दी गई। डीके शिव कुमार को भी मोर्चे पर उसी भूमिका में लगाया गया जिस भूमिका में सिद्धारमैया थे। परिणाम सुखद रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि कांग्रेस को जैसे ही एक जगह विजय मिलती है वह फूल के कुप्पा हो जाती है। छत्तीसगढ़, राजस्थान, मध्य प्रदेश में कांग्रेस ने फिर वही गलती दोहराई, अपने मोरचा खाए हथियारों को ही फिर से आजमाने की त्रुटि की पुनरावृत्ति की फलस्वरूप औंधे मुंह आकर गिरे। कांग्रेसी परिवार में जितने वट वृक्ष है वह अपने नीचे किसी दूसरे वृक्ष को पनपने ही नहीं देते। इन तीनों राज्यों की भारी हार से भी कांग्रेस ने कोई सबक नही सीखा। हरियाणा चुनाव में म्यूजियम में रखी बाबा आदम के जमाने की तलवार भूपिंदर सिंह हुड्डा को युद्ध के मोर्चे पर इस भरोसे से लगाया कि वह मैदान फतह कर लेंगे। जिसे न तो अपनी ताकत का अंदाजा था और न ही जमीनी हकीकत का डुबा दिया लुटिया; बुड्डा ने। चुनाव परिणाम आने के बाद भी यदि हुड्डा से पूछा जाए कि हरियाणा में चुनाव कौन जीतेगा तब वह कहते सुने जा सकते हैं कि चिन्ता न करो, चुनाव परिणाम बदलेगा, मुख्यमंत्री की शपथ हम ही लेंगे।

कांग्रेसियों को आत्म मंथन करने की जरूरत

कांग्रेसियों को आत्म मंथन करने की जरूरत है कि आखिर वह कौन से समीकरण रहे हैं जिसके दम पर उन्होंने लम्बे समय तक शासन किया है। कांग्रेस को साप्ताहिक चिन्तन शिविर आयोजित करने की आवश्यकता है। जिसमें उन सभी बिन्दुओं पर गहन विचार किया जाना चाहिए कि आखिर भस्मासुर ईवीएम से छुटकारा कैसे मिले, बेईमान चुनाव आयोग के रहते हुए भी निष्पक्ष चुनाव कैसे संपादित हों। कांग्रेस के लम्बे शासन काल की कुर्सी के पाए कौन कौन से थे? उन्हें फिर से अपने पक्ष में लामबंद कैसे किया जाए। विवेचना में यह यथार्थ प्रकाशित होगा कि कांग्रेस को लम्बे समय तक शासन का सुख देने में अनुसूचित जातियों और मुसलमानों की अहम भूमिका रही है। अनुसूचित जातियों और मुसलमानों ने कांग्रेस का जो सशक्त भवन निर्माण किया था सवर्ण जातियों ने उस पर सिर्फ रंग रौशन का कार्य किया। चुंकि बाहरी आभा में यही सवर्ण जातियां दिखती थी लिहाजा हर कोई इन्हीं के गुण गान में मस्त रहता, जीत का श्रेय भी इन्हीं के सिर बंधता और सत्ता का सारा सुख भी यही भोगते थे।

अनुसूचित जातियों को अपने संविधानिक अधिकारों की है जानकारी

अब समय ने तेज़ी से करवट बदला है। अनुसूचित जातियों को अपने संविधानिक अधिकारों की जानकारी है। उसे प्राप्त करने के लिए वह सजग भी हैं। उन्हें यह भी ज्ञात है कि उनके संविधानिक अधिकार उन्हें कोई दूसरा दिलायेगा इस बिन्दु पर वह संशय की स्थिति में खड़े हैं। अब वह सत्ता में प्रत्यक्ष रूप से भागीदारी चाहते हैं। अब वह भरोसा करना नही चाहते हैं बल्कि भरोसा देने के लिए उत्सुक हैं। वह दिखाना चाहते हैं कि संविधान की रक्षा के लिए संविधान के प्रति समर्पण भाव प्रदर्शित करने का नैतिक बल प्रस्तुत हो न कि नस्लों की हिफ़ाज़त के लिए। जहां तक राहुल गांधी के नेतृत्व का प्रश्न है, लोग भरोसा ज़रूर करते हैं परन्तु यह भी समझते हैं कि कांग्रेस पार्टी संगठन पर राहुल गांधी की पकड़ बहुत ही ढीली है। जब वह यह कहते हैं कि संविधान ही देश का सबसे बड़ा ग्रन्थ है तब क्या वह संगठन और खासतौर से कार्य समिति में अनुसूचित जातियों, पिछड़ी जातियों और मुसलमानों को उनके आबादी के अनुपात में भागीदारी देंगे? चाहते हुए भी इस पुनीत कार्य को अंजाम देने में सफल हो पायेंगे? यदि वह यह पुनीत मन्तव्य पूर्ण कर लेते हैं तब प्रमाणित हो जायेगा कि संगठन पर राहुल गांधी की पकड़ मजबूत है, अन्यथा आशंका को ही बल मिलेगा।

कांग्रेस किसी भी हार से सबक सीखने को तैयार नहीं

कांग्रेस कार्य समिति के मल्ल युद्ध के योद्धाओं की दांव पर संकट के बादल मंडरा रहे है। प्रतीत होता है या तो उनकी शारीरिक क्षमता क्षीण हो गई है या फिर मानसिक अवस्था ऐसी नही बची है कि वह किसी नए युद्ध कौशल का अभ्यास कर सकें। लड़ते जा रहे है अपनी जंग लगे तलवारों से, हर युद्ध में मुस्कुराते हुए शिकस्त दर शिकस्त कबूल करते जा रहे हैं। दुश्मन हर युद्ध में अत्याधुनिक हथियारों से लैस होकर इनके हाथ कतरने में कामयाब है। कांग्रेस किसी भी हार से सबक सीखने को तैयार ही नही है। गुजरात चुनाव का उदाहरण सामने रख एक तस्वीर खींचने का प्रयास करते हैं, 2017 विधान सभा चुनाव में कांग्रेस ने बीजेपी को कांटे का टक्कर दिया। जहां बीजेपी 99 सीट जीतकर अपनी सरकार बचाने में कामयाब रही वहीं कांग्रेस ने 77 सीट हासिल कर खुली चुनौती प्रस्तुत की थी। कांग्रेस ने इस चुनाव परिणाम से बीजेपी को यह पैगाम भेज दिया था कि हमने तुम्हारी कब्र खोद दी है, लाश आना बाकी है, 2022 के चुनाव में तुम्हारी लाश लायेंगे दफन कर फातिया भी पढ़ेंगे। हुआ क्या? कांग्रेस ने 2022 विधान सभा चुनाव में बीजेपी को वॉकओवर दे दिया। राहुल गांधी के लिए जैसे गुजरात विधानसभा चुनाव कोई मायने ही नहीं रखता था। वह चुनाव संचालन के बरक्स भारत जोड़ो यात्रा में यूं मशगूल थे जैसे वह विश्व विजय अभियान पर निकले हों। परिणाम यह हुआ कि बीजेपी ने गुजरात विधानसभा के सारे रिकॉर्ड धवस्त करते हुए 156 सीट पर जीत का परचम लहराया और कांग्रेस की मैय्यत पर रोने के लिए कुछ लोग बचे रहे इसलिए 15 सीट छोड़ दी। विपक्ष दल का नेता बन सकें इस काबिल भी नहीं छोड़ा। भारतीय राजनीति में गुजरात का यह संस्करण कांग्रेस के लिए काला अध्याय रहा है। क्या किसी ने कभी इस हार की समीक्षा की, यदि नहीं तो क्यों? बीजेपी ने भांप लिया था कि विजय रुपाणी नामक तलवार में जंग लग चुकी है, इस तलवार से 2022 का चुनावी मैदान फतह करना संभव नहीं होगा, फलस्वरूप सितम्बर 2021 में अनुपयुक्त रुपाणी तलवार जो कि विजय के काबिल नहीं बची थी उठाकर फेंक दिया कूड़ेदान में। म्यान से भूपेन्द्र पटेल नामक तलवार निकाली, युद्ध की पूरी तस्वीर ही बदल दी। रच दिया नया इतिहास गुजरात विधानसभा का।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

क्या फिर बन रहे हैं विश्व युद्ध के हालात!

विश्व की तमाम स्वयंभू महाशक्तियों द्वारा यदि युद्ध रोकना, संघर्ष न होने देना ही उद्देश्य होता तो आज सम्पूर्ण विश्व पुनः विश्व युद्ध जैसी स्थिति के मुहाने पर आकर न खड़ा हो गया होता। आपको जानकर हैरानी होगी कि जापान के हिरोशिमा में 90 प्रतिशत चिकित्सक और नर्स मारे गए या घायल हो गए थे और 45 में से 42 अस्पताल काम नहीं कर रहे थे।

दुनिया की सबसे बड़ी त्रासदी में से अगर बात की जाए तो यह द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान हिरोशिमा और नागासाकी में हुआ परमाणु बम हमला था। 6 अगस्त 1945 को हुए इस हमले में अनुमानित तौर पर हिरोशिमा में 140,000 लोगों की और नागासाकी में 74,000 लोगों की जान गई थी। इस घटना के कई सालों बाद भी इसका प्रभाव देखा गया और विकिरण के कारण ल्यूकेमिया, कैंसर या अन्य भयानक दुष्प्रभावों का सामना करना पड़ा। ऐसे में हिरोशिमा और नागासाकी में परमाणु हमले के आठ दशक बाद भी सवाल उठते हैं कि क्या समूचे विश्व ने उन परमाणु हमलों से उत्पन्न विभीषिका से सबक लिया? क्या विश्व की तमाम महाशक्तियों सहित छोटे-छोटे देशों ने युद्ध को रोकने जैसा कोई कदम उठाया है? 6 अगस्त, 1945 और 9 अगस्त, 1945 को अमेरिका द्वारा जापान के दो शहरों हिरोशिमा और नागासाकी में गिराए गए परमाणु बम से अनुमानित रूप में ढाई लाख नागरिक मारे गए थे।

ऐसी ही युद्ध की और भी कई विभीषिकाएं हैं। लेकिन विश्व समुदाय ने सबक लेने की कोशिश नहीं की। विश्व की तमाम स्वयंभू महाशक्तियों द्वारा यदि युद्ध रोकना, संघर्ष न होने देना ही उद्देश्य होता तो आज सम्पूर्ण विश्व पुनः विश्व युद्ध जैसी स्थिति के मुहाने पर आकर न खड़ा हो गया होता। आपको जानकर हैरानी होगी कि जापान के हिरोशिमा में 90 प्रतिशत चिकित्सक और नर्स मारे गए या घायल हो गए थे और 45 में से 42 अस्पताल काम नहीं कर रहे थे। 70 प्रतिशत पीड़ितों को कई चोटें आईं थी, जिनमें से ज्यादातर मामलों में गंभीर जलन भी शामिल थी। दुनिया भर में सभी समर्पित बर्न बेड किसी भी शहर पर एक भी परमाणु बम के जीवित बचे लोगों की देखभाल के लिए अपर्याप्त थे। हिरोशिमा और नागासाकी में ज्यादातर पीड़ितों की मृत्यु बिना किसी देखभाल के हुई। इतना ही नहीं इस परमाणु बम हमला के बाद सहायता प्रदान करने के लिए शहर में आए कई वालिंटियर भी विकिरण की वजह से मारे गए थे। दो वर्ष से अधिक समय से चलता आ रहा रूस-यूक्रेन युद्ध, पिछले एक वर्ष से चलता इस्त्राइल-हमास युद्ध के साथ ही आरम्भ हुआ इस्त्राइल-ईरान टकराव समूचे विश्व का ध्यान अपनी तरफ बनाये हुए हैं। विश्व की तमाम महाशक्तियां आए दिन किसी न किसी रूप में इन युद्धों में अपनी उपस्थिति दर्शा ही देती हैं। हाल के समय में पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान, बांग्लादेश आदि की सत्ता परिवर्तन की घटनाएं, कई देशों के राष्ट्रध्यक्षों द्वारा अपनी जान बचाकर देश छोड़ने की घटनाएं, इन देशों में आंतरिक हिंसात्मक घटनाएं यहां के नागरिकों को युद्ध की तरफ ही धकेलती है। ऐसे में हैरान कर देने वाली बात ये है कि आए दिन किसी न किसी कार्यक्रम, समारोह के द्वारा शांति, अहिंसा, प्रेम, सद्भाव आदि का पाठ पढ़ाने वाले देश, युद्ध की विभीषिका से परिचित करवाते अनेक अंतर्राष्ट्रीय संगठन क्यों अपने प्रयासों में विफल हो जाते हैं?

संजय

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

आसियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है भारत

के.एस. तोमर

आसियान की सफलता हेतु आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संबंधों को गहरा करके भारत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। व्यापार और निवेश में सुधार, खासकर आसियान-भारत मुक्त व्यापार समझौते के जरिए, आर्थिक वृद्धि को समर्थन दे सकता है। भारत की डिजिटल और तकनीकी क्षमता, विशेषकर आईटी और फिनटेक में, आसियान की डिजिटल अर्थव्यवस्था और बुनियादी ढांचे के विकास में मदद कर सकती है, जिससे एकीकृत क्षेत्रीय बाजार का निर्माण हो सके। हालिया आसियान शिखर सम्मेलन म्यांमार संकट पर कोई ठोस प्रगति करने में विफल रहा, जिसका मुख्य कारण आंतरिक विभाजन और ब्लॉक की गैर-हस्तक्षेप नीति रही। नेताओं ने म्यांमार के जारी गृहयुद्ध और मानवाधिकार उल्लंघनों पर चर्चा की, लेकिन कोई ठोस कदम या प्रतिबंध तय नहीं हो सका। शांति बहाली के लिए आसियान की पांच-सूत्री सहमति अब तक लागू नहीं हो पाई है, और म्यांमार की सैन्य सरकार का सहयोग न के बराबर है।

थाइलैंड और कंबोडिया जैसे देशों द्वारा जुंटा से संपर्क ने आसियान की प्रतिक्रिया को कमजोर किया। सुरक्षा के लिहाज से, आसियान-नेतृत्व वाले मंचों में भारत की भागीदारी और समुद्री सहयोग, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में स्थिरता सुनिश्चित करते हैं। भारत के रक्षा संबंध, संयुक्त सैन्य अभ्यास और रणनीतिक साझेदारी, क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करते हैं। जलवायु परिवर्तन में, भारत अपने नवीकरणीय ऊर्जा के अनुभव को साझा कर आसियान की हरित संरक्षण में मदद कर सकता है। भारत-म्यांमार-थाइलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसे बुनियादी ढांचा परियोजनाओं से, आसियान के साथ कनेक्टिविटी बढ़ाकर भारत व्यापार गतिशीलता को प्रोत्साहित कर सकता है। भारत का संतुलित भू-राजनीतिक दृष्टिकोण, आसियान को क्षेत्र में अपनी केंद्रीयता बनाए रखने में मदद करता है, जिससे एक बहुध्रुवीय, स्थिर दक्षिण-पूर्व एशिया की सुरक्षा सुनिश्चित होती है। हाल में प्राकृतिक आपदाओं के दौरान मानवीय सहायता और आपदा राहत प्रयासों में भारत की प्रतिबद्धता, आसियान के विकास और स्थिरता में उसकी सहायक भूमिका को और मजबूत करती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने 20वें आसियान-भारत शिखर सम्मेलन में अपने दस-सूत्री संदेश में प्रमुख क्षेत्रों में आसियान के साथ साझेदारी पर बल दिया। उन्होंने

हिंद-प्रशांत में शांति, सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए एक मजबूत रणनीतिक साझेदारी की आवश्यकता पर बल दिया। समुद्री सहयोग, व्यापार, निवेश और आपूर्ति शृंखलाओं को बढ़ाने और डिजिटल परिवर्तन, साइबर सुरक्षा और एआई में सहयोग की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने बुनियादी ढांचा कनेक्टिविटी और सुरक्षा और आतंकवाद विरोधी सहयोग पर भी जोर दिया। दरअसल, अब आसियान कई चुनौतियों का सामना कर रहा है, जो उसकी प्रभावशीलता को कमजोर कर सकती हैं। 1967 में शांति, समृद्धि और क्षेत्रीय एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से गठित आसियान ने अपने सदस्य देशों के बीच संवाद और सहयोग के लिए एक मंच तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि, कई आंतरिक और बाहरी मुद्दों ने इसकी सीमाओं को उजागर किया है। आसियान के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक भू-राजनीतिक विभाजन है। सदस्य देशों की राजनीतिक प्राथमिकताएं और विदेशी नीति अभिविन्यास भिन्न हैं, विशेष रूप से अमेरिका और चीन जैसी बड़ी शक्तियों से निपटने में। जहां कंबोडिया और लाओस, आर्थिक निर्भरता के कारण चीन की ओर झुके हुए हैं, जबकि अन्य, जैसे वियतनाम और फिलीपींस, दक्षिण चीन सागर में चीन की क्षेत्रीय महत्वाकांक्षाओं को लेकर सतर्क हैं। बाहरी शक्तियों से संबंधों को प्रबंधित करने पर यह सहमति की कमी, आसियान की सुरक्षा और क्षेत्रीय विवादों जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एकजुट मोर्चा पेश करने की क्षमता को कमजोर करती है। परिणामस्वरूप, दक्षिण चीन सागर संघर्ष अनसुलझा है। एक और बड़ी चुनौती आसियान की संस्थागत कमजोरी है।

संगठन की निर्णय लेने की प्रक्रिया, सर्वसम्मति पर आधारित होती है, जिससे अक्सर कार्रवाई में देरी होती है। घरेलू मामलों में हस्तक्षेप नहीं करने के सिद्धांत ने म्यांमार और कंबोडिया जैसे अधिनायकवादी शासन को मानवाधिकार उल्लंघनों के लिए जवाबदेही से बचने की अनुमति दी है, जिससे वैश्विक मंच पर आसियान की साख को नुकसान पहुंचा है। म्यांमार संकट इसका एक उदाहरण है। म्यांमार पर आसियान की 'पांच-सूत्री सहमति' कोई ठोस परिणाम देने में विफल रही है। आने वाले दशकों में प्रासंगिक बने रहने के लिए, आसियान को अपने संस्थागत ढांचे में सुधार करने, आर्थिक व नियामक सामंजस्य को बढ़ाने, बाहरी संबंधों के प्रति अधिक सुसंगत दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता होगी।

नये जिलों के सृजन की तार्किकता का सवाल

अशोक लवासा

कहने को 'न्यूनतम सरकार, अधिकतम शासन'- एक बढ़िया और उपयुक्त नारा है। अन्य लोकप्रिय मुहावरा यह है कि भारत की शासकीय संरचना केवल तीन शक्तिशाली स्तंभों पर टिकी है- प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री और जिलाधीश; जिसको लेकर आमतौर पर कहा जाता है कि पीएम-सीएम-डीएम नामक त्रिमूर्ति भारत का राजकाज चलाती है। विभाजन के समय भारत में जिलों की संख्या सटीक रूप से ज्ञात नहीं है, लेकिन 1951 में स्वतंत्रता के बाद पहली जनगणना के समय कुल 402 जिले थे। ये जिले 27 राज्यों और 3 केंद्रशासित प्रदेशों (यूटी) में फैले हुए थे। नवीनतम आंकड़े के अनुसार, देश में 28 राज्य, 8 केंद्रशासित प्रदेश और 806 जिले हैं। इनमें 5 जिले हाल ही में लद्दाख में जोड़े गए हैं-जो कि सबसे नया केंद्रशासित प्रदेश है और जिसकी स्थापना 2019 में हुई है। अब इसके जिलों की संख्या 2 से बढ़कर 7 हो गई है। देशभर के जिलों की संख्या साल 1951 में 402 थी व साल 1991 तक उसमें 74 नए जिले बनकर जुड़े।

अगले दशक (1991-2001) में 117 नए जिले जोड़े गए, 2001 से 2011 के बीच इनकी संख्या 47 रही। पिछले 13 वर्षों में 166 नवीन जिलों का निर्माण हुआ है। साल 1951 में, आंध्र प्रदेश में 19 जिले थे और हैदराबाद सूबे में 17 जिले थे, आज आंध्र प्रदेश में 26 तो आंध्र प्रदेश से अलग होकर बने तेलंगाना में ही 33 जिले हैं। इसी तरह, असम में यह संख्या 13 से बढ़कर 35 हो गई, बिहार में 18 से 38, दिल्ली में 1 से 11, हिमाचल प्रदेश में 6 से 12, जम्मू-कश्मीर में 6 से 20, पंजाब में 12 से 23, ओडिशा में 13 से 30, राजस्थान में 21 से 50, उत्तर प्रदेश में 40 से 75 और पश्चिम बंगाल में संख्या 15 से 30 हो गई है। राज्य पुनर्गठन अधिनियम-1956 लागू होने के बाद बनाए गए कुछ नए राज्यों का रिकॉर्ड चौंकाने वाला है। हरियाणा में 22 जिले हैं, जबकि 1966 में इसके निर्माण के समय 7 जिले थे। तेलंगाना की गिनती 10 से बढ़कर 33 हो गई है, उत्तराखंड में 9 से 13, झारखंड 18 से 24 और छत्तीसगढ़ में 16 से बढ़कर 33 जिले हो गए।

एक नए जिले का निर्माण, जो कि अनिवार्य रूप से एक प्रशासनिक इकाई होता है, लगता नहीं यह करते वक्त किसी भी तर्कसंगत सिद्धांत का पालन किया जाता है। जिला बनाने के लिए कोई परिभाषित भौगोलिक या जनसांख्यिकीय मानदंड नहीं हैं। भारत का सबसे बड़ा जिला कच्छ है, जिसका क्षेत्रफल 45,674 वर्ग किमी और जनसंख्या 20,92,371 है। सबसे छोटा जिला माहे है, जिसका क्षेत्रफल महज 8.69 वर्ग किमी. और जनसंख्या 41,816 है। आबादी के हिसाब से उत्तर 24 परगना सबसे बड़ा जिला है, जहां पर 1,00,09,781 लोग बसे हैं और कुल क्षेत्रफल 4,094 वर्ग किमी है, जबकि सबसे कम आबादी दिबांग घाटी की है जहां पर 8,004 निवासी हैं और 9,129 वर्ग किमी क्षेत्र है। अविभाजित लेह जिले की जनसंख्या 1,33,487 और क्षेत्रफल 45,110 वर्ग किमी था वहीं कारगिल की जनसंख्या 1,40,802 और क्षेत्रफल 14,086 वर्ग किमी था। अब कारगिल से काटकर द्रास और झांस्कार को जिला बनाया गया है और लेह को विभाजित कर चांगथांग, नुब्रा और शाम घाटी नामक जिले बनाए गए हैं। यह सच है कि मूल लद्दाख जिला प्रशासन चलाने के लिहाज से अत्यंत विशाल था।

कारगिल और लेह सांस्कृतिक रूप से अलहदा हैं। इस कारण 1979 में कारगिल को एक अलग जिले के रूप में रखा गया। छोटा किए जाने के बावजूद लेह जिला भौगोलिक दृष्टि से देश का दूसरा सबसे बड़ा जिला बना रहा। भारत में नए जिले का निर्माण आम तौर पर किसी वस्तुनिष्ठ मानदंड की बजाय राजनीतिक मांगों का परिणाम होते हैं। मसलन, लद्दाख के मामले में, कारगिल से अलग करके एक नया मुस्लिम बहुल जिला 'सन्कू' बनाने के लिए विरोध प्रदर्शन हुए, शायद इसलिए भी कि सर्दियों के दौरान यह इलाका अक्सर कारगिल से कटा रहता है। कारगिल से अलग करके एक नया जिला बनाने की इस किस्म की मांग झांस्कार के लोगों द्वारा भी की गई थी। यही बात लेह के सभी हिस्सों जैसे द्रास, चांगथांग, खालत्सी और तुरतुक के बारे में भी कही जा सकती है। हालांकि, क्या एक जिले का दर्जा देने की मांग के पीछे महज एक नई प्रशासनिक इकाई बनाने वाला औचित्य काफी है, जबकि इससे राजकोष पर काफी वित्तीय बोझ पड़ता है। एक नया जिला बनते ही अतिरिक्त कर्मी, नए कार्यालय और आवासीय भवनों का निर्माण जरूरी हो जाता है।

नया जिला आम तौर पर उपखंड मुख्यालय को अपग्रेड कर बनाया जाता है, साथ ही पुलिस अधीक्षक और अन्य जिला-स्तरीय कार्यालय जैसे सहायक तंत्र की स्थापना करनी पड़ती है। लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं क्योंकि संलग्न कार्यालय बनने में लंबा वक्त लगता है। कभी-कभी, बजटीय बाधाओं के कारण सभी विभागीय कार्यालयों के अपग्रेडेशन की न तो जरूरत होती है और न ही यह संभव है। मुख्य बिंदु यह है कि नया जिला बनने से जिलाधिकारी को अधिकारों का कोई बहुत बड़ा हस्तांतरण नहीं होता। इसलिए, यह समझना कठिन है कि यदि एक अधिकारी एक बड़े क्षेत्र को वर्तमान शक्तियों के साथ प्रभावी ढंग से प्रशासित नहीं कर पाया तो वह पूर्ववत शक्तियों के साथ एक छोटे क्षेत्र का कामकाज अधिक प्रभावशाली ढंग से कैसे कर पाएगा। यह शायद उस समय उचित था जब भौगोलिक दूरी से काम में देरी हुआ करती थी, लेकिन एक बृहद कार्यात्मक संचार नेटवर्क के अतिरिक्त प्रौद्योगिकी-संचालित शासन तंत्र के युग में, निर्णय का अधिकार सौंपना अधिक उपयुक्त हो सकता है, जैसा कि दूर-दराज के बर्फीले जिलों में किया जाता है, जब वे दुर्गम बन जाते हैं, और निर्णय लेने वाली ऐसी प्रणाली विकसित करना जो स्थानीय स्तर पर उच्च अधिकारियों की भौतिक उपस्थिति पर निर्भर न हो।

विटामिन-डी वाली इन चीजों से संक्रामक बीमारियां रहेंगी दूर

क्यों जरूरी है विटामिन-डी

विटामिन-डी के अल्पकालिक और दीर्घकालिक कई प्रकार के स्वास्थ्य लाभ हो सकते हैं। ये इम्युनिटी को मजबूत बनाकर फ्लू सहित कई प्रकार की संक्रामक बीमारियों से बचाने के लिए तो जरूरी है ही साथ ही कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ाकर मजबूत हड्डियों के निर्माण के लिए भी महत्वपूर्ण है। आहार में पर्याप्त कैल्शियम और विटामिन-डी की मात्रा ऑस्टियोपोरोसिस जैसी हड्डियों की गंभीर समस्याओं को रोकने में मदद करती है। सूरज की रोशनी विटामिन-डी का सबसे अच्छा स्रोत है। मानसून के दिनों में आहार में कई चीजों को शामिल करके भी इसका आसानी से पूर्ति की जा सकती है?

अंडा

मानसून के दिनों में विटामिन-डी की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अंडे खाना विशेष लाभकारी हो सकता है। अंडे के सफेद भाग में भरपूर प्रोटीन होता है, वहीं इसकी जर्दी विटामिन-डी सहित कई अन्य प्रकार के पोषक तत्वों से भरपूर होती है। रोजाना दो-तीन अंडे शरीर के लिए जरूरी प्रोटीन, विटामिन्स और मिनरल्स का आसानी से पूर्ति करने में सहायक हैं।

नट्स और सीड्स

विटामिन-डी प्राप्त करने के लिए नट्स और सीड्स भी अच्छे स्रोत हो सकते हैं। काजू और हेजलनट्स, बादाम के सेवन से आसानी से पूर्ति की जा सकती है। काजू विटामिन-डी के सबसे अच्छे स्रोतों में से एक है। इसके अलावा चिया सीड्स, कद्दू के बीज के नियमित सेवन से भी शरीर के लिए इस पोषक तत्व की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सकता है। इसके अलावा बादाम में विटामिन बी, फाइबर, जिंक, कैल्शियम, मैग्नीशियम, पोटेशियम, विटामिन ई और आयरन भी भरपूर मात्रा में पाया जाता है।

फल-सब्जियां

दैनिक आहार में कई प्रकार के मौसमी फलों-सब्जियों को शामिल करना भी महत्वपूर्ण है। केला, कीवी, पपीता और संतरे जैसे फलों को शामिल करने से आपको विटामिन डी की जरूरतें पूरी करने में मदद मिल सकती है। संतरे में कैल्शियम के साथ-साथ विटामिन डी भी होता है। कई सब्जियां भी इस विटामिन से भरपूर मानी जाती हैं। शाकाहारी लोग हरी पत्तेदार सब्जियों और साग जैसे केल, पालक और कोलार्ड से विटामिन डी प्राप्त कर सकते हैं। विटामिन-डी के अलावा, ये सब्जियां विटामिन के आयरन और फाइबर की भी पूर्ति करती हैं।

शरीर को स्वस्थ रखने, रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने और कई प्रकार की बीमारियों से बचाव के लिए हमें रोजाना आहार के माध्यम से भरपूर मात्रा में पोषक तत्वों की जरूरत होती है। विटामिन-डी हमारी सेहत के लिए कई मामलों में महत्वपूर्ण है। हड्डियों को मजबूत रखने, शरीर में कैल्शियम के अवशोषण को बढ़ाने और इम्युनिटी सिस्टम की मजबूती के लिए विटामिन-डी हमारे लिए बहुत आवश्यक माना जाता है। मानसून के बाद के दिनों में विटामिन-डी वाली चीजों को आहार का हिस्सा जरूर बनाना चाहिए, इसके कई स्वास्थ्य लाभ हो सकते हैं। विटामिन की कमी के कारण आपमें कई प्रकार की संक्रामक बीमारियों के जोखिम भी हो सकता है। ऐसे में आहार के माध्यम से इसकी पूर्ति पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

हंसना मना है

संजना तीसरी बार ड्राइविंग लाइसेंस का इंटरव्यू देने पहुंची, आफीसर- अगर एक तरफ आपके पति हो और दूसरी तरफ आपका भाई हो तो आप किसको मारोगी? संजना- पति को, आफीसर- अरे मैडम आपको तीसरी बार बता रहा हूं की आप ब्रेक मारोगी?

कंप्यूटर इंजीनियरिंग की लड़की को किसी लड़के ने छेड़ा, उसका गुस्सा ऐसे निकला-अरे ओ पेन ड्राइव के ढक्कन, पैदाइशी Error, Virus के बच्चे, E&cel की Corrupt File, ऐसा Click मारूंगी कि ज़मीन से Delete हो कर कब्र में Install हो जायेगा! समझे?

जब एक लड़की लड़के से क्लास में पेन मांगती है तो..लड़का- कौन सा दूं? ब्लु, ब्लैक, रेड, ग्रीन? और जब एक दोस्त मांगे तब, लड़का- हट साले लड़की देखने आता है school में बिना पेन के?

एक आदमी खड़े-खड़े चाबी से अपना कान खुजा रहा था? दूसरा व्यक्ति उसे गौर से देखता हुए बोला- भाई साहब, आप स्टार्ट नहीं हो रहे, तो मैं धक्का लगाऊं?

कहानी | फर्क नजरिये का..

एक गांव में कुछ मजदूर पत्थर के खंभे बना रहे थे। उधर से एक साधु गुजरे। उन्होंने एक मजदूर से पूछा- यहां क्या बन रहा है? उसने कहा- देखते नहीं पत्थर काट रहा हूं? साधु ने कहा- हां, देख तो रहा हूं। लेकिन यहां बनेगा क्या? मजदूर झुंझला कर बोला- मालूम नहीं। यहां पत्थर तोड़ते - तोड़ते जान निकल रही है और इनको यह चिंता है कि यहां क्या बनेगा। साधु आगे बढ़े। एक दूसरा मजदूर मिला। साधु ने पूछा- यहां क्या बनेगा? मजदूर बोला- देखिए साधु बाबा, यहां कुछ भी बने। चाहे मंदिर बने या जेल, मुझे क्या। मुझे तो दिन भर की मजदूरी के रूप में 100 रुपए मिलते हैं। बस शाम को रुपए मिलें और मेरा काम बने। मुझे इससे कोई मतलब नहीं कि यहां क्या बन रहा है। साधु आगे बढ़े तो तीसरा मजदूर मिला। साधु ने उससे पूछा- यहां क्या बनेगा? मजदूर ने कहा- मंदिर। इस गांव में कोई बड़ा मंदिर नहीं था। इस गांव के लोगों को दूसरे गांव में उत्सव मनाने जाना पड़ता था। मैं भी इसी गांव का हूं। ये सारे मजदूर इसी गांव के हैं। मैं एक-एक छेनी चला कर जब पत्थरों को गढ़ता हूं तो छेनी की आवाज में मुझे मधुर संगीत सुनाई पड़ता है। मैं आनंद में हूं। कुछ दिनों बाद यह मंदिर बन कर तैयार हो जाएगा और यहां धूमधाम से पूजा होगी। मेला लगेगा। कीर्तन होगा। मैं यही सोच कर मस्त रहता हूं। मेरे लिए यह काम, काम नहीं है। मैं हमेशा एक मस्ती में रहता हूं। मंदिर बनाने की मस्ती में। मैं रात को सोता हूं तो मंदिर की कल्पना के साथ और सुबह जगता हूं तो मंदिर के खंभों को तराशने के लिए चल पड़ता हूं। बीच - बीच में जब ज्यादा मस्ती आती है तो भजन गाने लगता हूं। जीवन में इससे ज्यादा काम करने का आनंद कभी नहीं आया। साधु ने कहा- यही जीवन का रहस्य है मेरे भाई। बस नजरिये का फर्क है। कोई काम को बोझ समझ रहा है और पूरा जीवन झुंझलाते और हाय - हाय करते बीत जाता है। लेकिन कोई काम को आनंद समझ कर जीवन का लुत्फ ले रहा है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

बिगड़े काम बनेंगे। निवेश मनोनुकूल लाभ देगा। नौकरी में प्रभाव वृद्धि होगी। कोई पुराना रोग बाधा का कारण हो सकता है। सामाजिक कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा।

वृषभ

धार्मिक अनुष्ठान में भाग लेने का अवसर प्राप्त हो सकता है। सत्संग का लाभ मिलेगा। राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे।

मिथुन

वाहन, मशीनरी व अग्नि के प्रयोग में सावधानी रखें। विशेषकर गृहिणियां लापरवाही न करें। आवश्यक वस्तुएं गुम हो सकती हैं। दुष्जन हानि पहुंचा सकते हैं।

कर्क

वाणी में शब्दों का प्रयोग सोच-समझकर करें। प्रतिद्वंद्विता में कमी होगी। राजकीय सहयोग प्राप्त होगा। वैवाहिक प्रस्ताव मिल सकता है। व्यापार में वृद्धि होगी।

सिंह

स्थायी संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। मनपसंद रोजगार मिलेगा। आर्थिक उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे। कर्ज समय पर चुका पाएंगे। बैंक-बैलेंस बढ़ेगा।

कन्या

किसी मांगलिक कार्य का आयोजन हो सकता है। स्वादिष्ट व्यंजनों का लुत्फ उठा पाएंगे। यात्रा लाभदायक रहेगी। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। दूसरों के झगड़ों में न पड़ें।

तुला

आय में निश्चितता रहेगी। शत्रु शांत रहेंगे। व्यापार-व्यवसाय से लाभ होगा। बुरी खबर मिल सकती है, धैर्य रखें। दौड़धूप की अधिकता का स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ेगा।

वृश्चिक

आवश्यक वस्तु समय पर नहीं मिलने से खिन्नता रहेगी। बनते कामों में बाधा उत्पन्न होगी। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा। काम में मन नहीं लगेगा।

धनु

जल्दबाजी व लापरवाही से हानि होगी। राजकीय कोप भुगतना पड़ सकता है। विवाद न करें। शुभ समाचार प्राप्त होंगे। प्रसन्नता रहेगी। व्यापार मनोनुकूल चलेगा।

मकर

कोई अनहोनी होने की आशंका रहेगी। काम में मन नहीं लगेगा। व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। रोजगार मिलेगा। आय में वृद्धि होगी। कारोबार में वृद्धि होगी।

कुम्भ

आंखों का विशेष ध्यान रखें। चोट व रोग से बचाएं। पुराना रोग उभर सकता है। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। वाणी पर नियंत्रण रखें। व्यवसाय की गति धीमी रहेगी।

मीन

यात्रा मनोनुकूल रहेगी। कारोबार से संतुष्टि रहेगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। प्रयास सफल रहेंगे। बुद्धि का प्रयोग करें। प्रमाद न करें। निवेश से लाभ होगा।

बॉलीवुड | मन की बात

राम गोपाल वर्मा ने लॉरेंस बिश्नोई को बताया फिल्मी स्टार्स से ज्यादा स्मार्ट

गुजरात जेल में बंद गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई ने एनसीपी नेता बाबा सिद्दीकी की हत्या की जिम्मेदारी ली। बाबा सिद्दीकी का बॉलीवुड हस्तियों के साथ गहरा नाता था। साथ ही वह सुपरस्टार सलमान खान के बेहद करीबी थे। यही कारण है कि सिद्दीकी की हत्या के बाद सलमान खान की सुरक्षा बढ़ा दी गई है। इसी बीच सुर्खियों में बने लॉरेंस बिश्नोई को लेकर फिल्म निर्माता राम गोपाल वर्मा ने चौंकाने वाला दावा किया है। उन्होंने कहा कि उन्हें लॉरेंस बिश्नोई फिल्मी सितारों से भी ज्यादा अच्छे लगते हैं। राम गोपाल वर्मा ने दावा किया कि लॉरेंस बिश्नोई उनके जानने वाले किसी भी फिल्म स्टार से ज्यादा अच्छे दिखने वाले हैं। उन्होंने एक्स पर अपने विचार साझा किए और प्रशंसकों ने इस पर प्रतिक्रियाओं की लड़ी लगा दी। तमाम सोशल मीडिया यूजर्स ने निर्देशक से गैंगस्टर की बायोपिक में सलमान खान को खलनायक के रूप में लेने के लिए कहा गया। राम गोपाल वर्मा सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपनी राय साझा करने से कभी नहीं कतराते। इस बार मशहूर फिल्म निर्माता ने कहा कि अगर कभी गैंगस्टर लॉरेंस बिश्नोई पर बायोपिक बनाई गई तो उन्हें बिश्नोई से ज्यादा अच्छा दिखने वाला बॉलीवुड स्टार नहीं मिलेगा। निर्देशक ने एक्स पर अपने विचार साझा किए। वर्मा ने गैंगस्टर की एक तस्वीर पोस्ट की जिसमें वह गंभीर दिख रहा था। बिश्नोई को काले और नारंगी रंग की हुडी जैकेट पहने देखा जा सकता है। राम गोपाल वर्मा ने एक्स पर लिखा, अगर कोई फिल्म सबसे बड़े गैंगस्टर पर आधारित है, तो कोई भी फिल्म निर्माता दाऊद इब्राहिम या छोटा राजन जैसे दिखने वाले व्यक्ति को कास्ट नहीं करेगा। यहां मैं एक भी फिल्म स्टार को नहीं जानता जो बिश्नोई से ज्यादा अच्छा दिखने वाला हो। एक यूजर ने कहा, आरजीवी निर्देशक और बिश्नोई नायक हैं, यहां खलनायक कौन है...सलमान? एक ट्वीट में लिखा गया, सलमान खान को लॉरेंस के रूप में कास्ट करना सबसे बड़ी विडंबना होगी। एक अन्य फैन ने लिखा, क्या हुआ सर फोन आ गया क्या। एकदम से प्यार आ गया?

पैसे देकर मेरे ऊपर कराया गया था मॉब अटैक: रवीना

बॉलीवुड | मसाला

स्टार्स के आसपास कई बार फैंस की भीड़ जमा हो जाती है। लेकिन लगातार अगर एक जैसी घटना हर किसी के साथ होने लगे तो बात चिंता की हो जाती है। बॉलीवुड एक्ट्रेस रवीना टंडन ने हाल ही में ऐसे ही एक सच पर से पर्दा उठाया, जब लोगों ने प्लानिंग के तहत उन पर अटैक किया। रवीना ने बताया कि वैसा ही सेम इंसीडेंट ऋचा चड्ढा के साथ भी हुआ था। रवीना ने कहा ये डरा देने वाला है।

मुंबई में इसी साल में जून में रवीना और ड्राइवर को कुछ लोगों ने घेर लिया था और उनपर रैश ड्राइविंग का आरोप लगाया था। रवीना ने बताया कि मुंबई पुलिस ने उन्हें इंडीकेट किया था कि ये प्री-प्लान्ड है। रवीना ने बताया कि ऋचा को तो मैटर सेटल तक करना पड़ा था। क्योंकि वहां कोई सीसीटीवी कैमरा नहीं थे, जिससे रियल फुटेज कैद हो पाता और पता चल पाता कि सच क्या है। रवीना ने कहा- दुर्भाग्य है कि ये मुंबई में चल रहा है, जो एक तरह से प्लानिंग के तहत की हुई चीज है। जो कि डराने की बात है। जब ये भीड़ का हादसा हुआ, एक्चुअल में, अगले दिन, मेरी दोस्त ऋचा चड्ढा ने मुझे फोन किया। उसने कहा, रवीना, तुम यकीन नहीं करोगी, मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ था। ऋचा के साथ भी यही हुआ, और किस्मत से, सच्चाई रिकॉर्ड करने के लिए कोई सीसीटीवी कैमरा नहीं था। उसे एक्चुअल में पैसे देने पड़े। उसे मामला सुलझाना पड़ा। पुलिस ने उससे कहा कि इसे सुलझा लो। वो बेचारी सही में आगे बढ़ी और उनके साथ मामले को सेटल कर लिया।

रवीना टंडन ने कहा कि पुलिस का मानना है कि उनके साथ हुई घटना पैसे हड़पने की एक प्लानिंग थी। उन्होंने बताया कि कैसे भीड़ ने उनके घर में घुसने की कोशिश की, जबकि उनके बच्चे अंदर थे और उनके पति घर से बाहर थे। रवीना और उनके हाउस हेल्प ने उन्हें रोकने के लिए गेट बंद कर दिया और जोर देकर कहा कि पुलिस को इस मामले को देख लेगी।

रवीना ने आगे कहा- मुझे याद है, भीड़ बहुत एग्रेसिव थी। वो मेरे घर में घुस रहे थे। मेरे बच्चे घर पर ऊपर थे। मेरे पति घर पर नहीं थे। जो मेरे मेल स्टाफ दिख रहे थे उनको वो खींच के मार रहे थे। दरअसल, गेट पर मैं खड़ी हो गई और मेरे जो दो घरेलू स्टाफ के सदस्य हैं, जो सालों से हैं मेरे साथ, हम गेट पर खड़े हो गए कि कोई भी घर में एंट्री नहीं करेगा। और वो धक्का दे दे के बोल रहे थे आप बस ड्राइवर को बाहर भेज दीजिए। तो मैंने कहा उसकी गलती है तो पुलिस को आ जाने दीजिए, फिर ले जाएंगे उसको। आप कौन होते हैं न्याय देने वाले? आप कौन होते हैं उसे पीटने वाले? आप क्यों मारना पीटना चाहते हो? नहीं मारना। कृपया किसी को मत मारो। लेकिन एक जो भीड़ इकट्ठा हो जाती है ना तो सब साथ में हो जाते हैं। जून 2024 में रवीना टंडन के घर के बाहर का एक वीडियो वायरल हुआ था, जहां एक्ट्रेस के ड्राइवर को तीन महिलाएं परेशान करती दिख रही थीं।

15 नवंबर को आतंक का भयानक रूप दिखाने आ रही है 'मैच फिक्सिंग'

अभिनेता विनीत कुमार सिंह अपने अलग-अलग किरदारों और अलग-अलग जॉनर की फिल्मों और वेब सीरीज के लिए जाने जाते हैं। आखिरी बार ओटीटी सीरीज रंगबाजः डर की राजनीति और फिल्म सिया में नजर आए अभिनेता विनीत कुमार सिंह लगातार काम कर रहे हैं। अभिनेता अब अपनी आगामी फिल्म मैच फिक्सिंग को लेकर चर्चा में चल रहे हैं। अभिनेता के फैंस भी इस फिल्म को देखने के लिए काफी उत्साहित हैं। अब हाल ही में, फिल्म की रिलीज डेट का भी खुलासा हो गया है। आइए जानते हैं कि यह फिल्म किस दिन सिनेमाघरों में दर्शकों का मनोरंजन करेगी। मैच फिक्सिंग कंवर खताना की किताब, द गेम बिहाइंड सैफरन टेरर से प्रेरित है। फिल्म की कहानी अनुज एस मेहता ने लिखी है। फिल्म में राजनीतिक बैकग्राउंड बखूबी दिखाया जाएगा। यही नहीं, मैच फिक्सिंग में भारत और पाकिस्तान की खुफिया एजेंसियों के बीच मुठभेड़ और आतंकी हमलों को भी पर्दे पर जीवंत तरीके से दिखाया जाएगा। अगर आप भी थ्रिलर फिल्में देखने के शौकीन हैं तो यह फिल्म देखने के लिए तैयार हो जाइए।

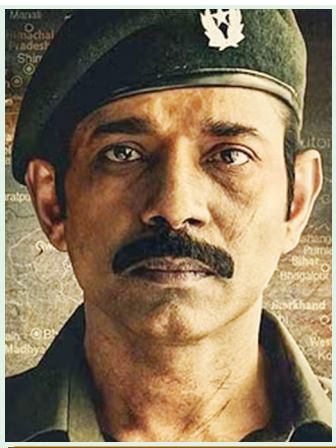

इस दिन सिनेमाघरों में रिलीज होगी फिल्म

निर्माताओं ने फिल्म का एक दिलचस्प मोशन पोस्टर भी जारी किया है। पोस्टर को देखकर ही यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि फिल्म दो देशों के बीच की कहानी को दिखाएगी, जिसका एक पक्ष राजनीति भी होगा। बता दें कि फिल्म 15 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। मैच फिक्सिंग में एक बार फिर अभिनेता विनीत कुमार एक अलग अवतार में नजर आएंगे और अपने फैंस का मनोरंजन करेंगे।

इन सितारों से सजी है फिल्म

फिल्म के किरदारों की बात करें तो इसमें विनीत कुमार सिंह, अनुजा साठे और मनोज जोशी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। फिल्म आर्टरेना क्रिएशंस प्राइवेट लिमिटेड के तहत पल्लवी गुर्जर द्वारा निर्मित है। फैंस अभिनेता की इस फिल्म को देखने के लिए काफी उत्साहित हैं।

अजब-गजब | क्या आपको मालूम है पटका हेलमेट की खूबी

बुलेटप्रूफ और काफी आरामदायक होता है फौजियों में पहना जाने वाला यह हेलमेट

हमारे दिमाग में अक्सर कई सवाल उठते रहते हैं। कुछ सवालों के जवाब का अंदाजा हम खुद लगा लेते हैं, तो कभी-कभी इसके लिए दूसरों से मदद लेनी पड़ती है। आजकल के जमाने में रेडिट से लेकर कोरा जैसे कई प्लेटफॉर्म उपलब्ध हैं, जहां पर लोग अपने सवालों को पूछ लेते हैं। वहीं, दूसरे यूजर्स उनका सही-सही जवाब देने की कोशिश करते हैं। आज हम आपके लिए कोरा पर पूछे गए एक सवाल को लेकर सामने आए हैं। एक यूजर ने कोरा पर पूछा है कि 'पटका हेलमेट क्या होता है, क्या इन्हें भारतीय सेना इस्तेमाल करती है?' इसका जवाब यूं तो कई लोगों ने दिया है। लेकिन संभव नाम के यूजर का उत्तर सबसे दिलचस्प है, क्योंकि उन्होंने इस हेलमेट की खूबियों के बारे में भी बताया है।

संभव ने कोरा पर लिखे जवाब में बताया है कि पटका हेलमेट बेहद खास होता है। कश्मीर में तैनात भारतीय सैनिक लंबे समय से इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। यह टोपी की तरह दिखता है, जिसे जवानों के लिए काफी

सुरक्षित माना जाता है। जिस तरह से कश्मीर में फौजियों पर पत्थरबाजी होती थी, उससे बचने में ये हेलमेट काफी मदद करता है और उन्हें सुरक्षित रखता है। कई बार आतंकी हमले में हेडशॉट यानी सिर पर गोली लगने की सूरत में भी यह जवानों को बचाता है। संभव ने आगे बताया कि यह हेलमेट लगभग सभी तरह की गोलियों को झेल सकता है। यूं तो ज्यादातर हेलमेट 7.62 mm और 5.56 mm राउंड की गोलियों के सामने असफल होते हैं, लेकिन पटका हेलमेट 9 mm की बुलेट को झेल सकते हैं। यहां तक कि स्पेशल एडजस्टमेंट के साथ यह AK-47 की गोलियों से भी जवानों की सुरक्षा कर सकते हैं।

इस हेलमेट की कई और खूबियां भी हैं। आपको जानकर हैरानी होगी कि गोलियों को झेलने वाला ये हेलमेट पहनने में भी काफी आरामदायक होता है। इसे पहनने के बाद भी जवानों को थकान महसूस नहीं होती है। ऐसा इसलिए, क्योंकि पटका हेलमेट के अंदर का भाग काफी नरम और मुलायम होता है। इतना ही नहीं, ये पटका हेलमेट इसलिए भी खास हो जाता है, क्योंकि इसको देश में ही बनाया जाता है। इसको डीआरडीओ द्वारा डिजाइन किया गया और बनाया गया है। इन्हीं लाजवाब खूबियों के कारण पटका हेलमेट लंबे समय से भारतीय जवानों की पहली पसंद रहा है। हालांकि, धीरे-धीरे अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी से लैस अन्य तरह के हेलमेट का भी इस्तेमाल भारतीय सेना करने लगी है।

80 फीट ऊंचे पेड़ पर चढ़ीं 3 महिलाएं, नौ दिन तक नहीं उतरेंगी, वजह है अजीबो-गरीब

रांची। झारखंड की राजधानी रांची से 17 किमी की दूरी पर एक अजीब घटना घटी। हुड़वा सरना स्थल का नजारा देखने वाले लोग हैरान हैं। दरअसल, यहां सरना स्थल में तीन महिलाएं पेड़ पर 80 फीट ऊपर चढ़कर सरना मां की आराधना कर रही हैं। स्थानीय लोगों ने इन्हें नीचे उतरने को कहा, लेकिन इन्होंने साफ तौर पर कहा कि वे 9 दिन के बाद ही उतरेंगी। दरअसल, इन तीन महिलाओं का नाम सालगी टोप्पो, नागी टोप्पो व बाबी टोप्पो। यह तीनों बीते बृहस्पतिवार से सरना मां की पूजा करने पेड़ पर चढ़ी हैं। अब 9 दिन के बाद ही नीचे आएंगी। लोगों ने बताया कि उन्होंने इशारा करके बताया कि फिलहाल वह तीनों साधना करने के लिए ऊपर चढ़ी हैं और उनको ज्यादा डिस्टर्ब न किया जाए। नीचे इन लोगों की रखवाली करते हुए संतोषी देवी बताती हैं, मैं यहीं बगल में रहती हूं और इन लोगों को ऊपर बैठा देख हम लोग भी नीचे बैठकर इनकी रखवाली करते रहते हैं। हम लोगों का सरना मां पर अटूट विश्वास है। हम लोग प्रकृति की पूजा करते हैं। जल, जंगल व जमीन की पूजा करते हैं, इसलिए इन तीनों ने साधना के लिए भी प्रकृति की गोद को चुना। संतोषी देवी ने आगे बताया, साधना करने के लिए इन तीनों को कई शांत-एकांत जगह जहां पर कोई भी इनको परेशान न करे चाहिए थी। इसलिए इन्होंने पेड़ में इतना ऊपर जाकर साधना करने की ठानी। ऐसा पहले किसी ने नहीं किया है, ऐसा हम पहली बार देख रहे हैं और यह देखना बड़ा दिलचस्प है। लेकिन, इनके हौसले को देखते हुए ऐसा लगता है कि सरना मां का इन पर कोई विशेष आशीर्वाद है। पास की प्रीतम देवी बताती हैं, ये तीनों सुबह 4:00 बजे के करीब नीचे उतरती हैं और फल खाती हैं। नीचे सरना मां की पूजा स्थली है। वहां पर पूजा करती हैं। पूजा के बाद एक डंडे के सहारे फिर चढ़ जाती हैं। जब ऊपर से उतरती हैं तो आसपास कोई नहीं होता और फिर रात में पेड़ में ही सोती हैं। हालांकि, हमने इनको चेताया कि कोई अनहोनी का डर हो सकता है। लेकिन, इनकी आस्था अटूट है कि ये किसी की सुनने को तैयार नहीं हैं। संतोषी देवी ने बताया, फिलहाल 9 दिन पेड़ के ऊपर चढ़कर साधना करेंगी। उसके बाद नीचे उतरकर 51 दिन तक पूजा पाठ कर साधना करेंगी। दरअसल, इन्होंने कुछ मन्नत मांगी है, इसलिए वह खासतौर पर साधना कर रही हैं। इनको देखकर हमें भी लगता है कि आने वाले दिनों में शायद हम भी ऐसा करें।

आदित्य ठाकरे ने खेला बड़ा चुनावी दांव, बोले-

एमवीए खत्म नहीं करेगा लड़की बहिन योजना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में 20 नवंबर को 288 सीटों पर होने वाले विधानसभा चुनाव से पहले राज्य की राजनीति में गर्माहट है। इसी बीच शिवसेना (यूबीटी) नेता आदित्य ठाकरे का एक बयान सामने आया है। जिसमें उन्होंने दावा किया है कि अगर महाराष्ट्र में एमवीए सत्ता में लौटती है, तो वह मौजूदा महायुति सरकार की लड़की बहिन योजना और मुंबई के इंट्री पर टोल माफी को खत्म नहीं करेगी।

महाराष्ट्र चुनाव को लेकर पूर्व मंत्री ने दावा किया कि धारावी पुनर्विकास परियोजना को क्रियान्वित करने वाले अडानी समूह को मुंबई की 1,080 एकड़ जमीन दी जा रही है। उन्होंने शिंदे सरकार पर आरोप लगाया कि चुनाव से पहले पिछले कुछ कैबिनेट में कई घोषणाओं की आड़ में सरकार ने अडानी समूह को लाभ पहुंचाने के लिए फैसले लिए। ठाकरे ने कहा लड़की बहन योजना और टोल माफी का फैसला सरकार ने पहले क्यों नहीं लिया? हम लड़की बहन योजना और टोल माफी को खत्म नहीं करेंगे। इसके बजाय हम लड़की बहन योजना के तहत दी जाने वाली वित्तीय सहायता की राशि बढ़ाएंगे। इसके साथ ही सीएम शिंदे के पिछले एमवीए सरकार द्वारा सभी परियोजनाओं को रोकने के आरोप पर आदित्य ठाकरे ने पलटवार करते हुए कहा वे उसी सरकार में ढाई साल तक शहरी विकास मंत्री थे और फिर भी वे बेशर्मी से इस बारे में बात कर रहे हैं। बता दें कि अविभाजित शिवसेना, कांग्रेस और अविभाजित एनसीपी का एमवीए गठबंधन नवंबर 2019 में महाराष्ट्र में सत्ता में आया, लेकिन उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली सरकार जून 2022 में गिर गई, जब एकनाथ शिंदे और अन्य शिवसेना विधायकों ने पार्टी नेतृत्व के खिलाफ बगावत कर दी और सरकार बनाने के लिए भारतीय जनता पार्टी से हाथ मिला लिया।

लोगों ने तैयार किया अपना निर्वासन कार्ड

पत्रकारों के बातचीत करते हुए आदित्य ठाकरे ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और अजीत पवार पर दिन में अपनी सरकार का रिपोर्ट कार्ड पेश करने के लिए कटाक्ष करते हुए कहा कि राज्य के लोगों ने अब अपना निर्वासन कार्ड तैयार कर लिया है। उन्होंने आरोप लगाया महायुति सरकार के तहत राज्य से व्यवसाय और नौकरियां निर्वासित कर दी गई हैं। महा विकास अघाड़ी (एमवीए) सरकार बहु-अरब डॉलर की धारावी पुनर्विकास परियोजना की निविदा से परे प्रोत्साहन को खत्म कर देगी।

'बंटी और बबली की तरह हैं भाजपा और चुनाव आयोग'

झामुमो ने केंद्र सरकार और आयोग पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। झारखंड विधानसभा चुनाव में एक महीने से भी कम का समय शेष रह गया है। राज्य में राजनीतिक गर्माहट अपने चरम पर है। इसी बीच झारखंड मुक्ति मोर्चा (झामुमो) ने चुनाव आयोग और भारतीय जनता पार्टी पर निशाना साधा है। पार्टी ने चुनाव आयोग पर भाजपा के पक्ष में काम करने का आरोप लगाया है। पार्टी की ओर से जारी बयान में कहा गया है कि चुनाव आयोग और बीजेपी बॉलीवुड फिल्म बंटी और बबली के जोड़े की तरह हैं। बता दें कि झामुमो का आरोप ईसीआई द्वारा यह घोषणा करने के एक दिन बाद आए हैं कि राज्य में 81 सदस्यीय विधानसभा के चुनाव दो चरणों में 13 और 20 नवंबर को होंगे।

झामुमो ने भाजपा और चुनाव आयोग पर संवैधानिक निकायों को नुकसान पहुंचाने की कोशिश करने का आरोप लगाते हुए कहा है कि केंद्र सरकार ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसियों का दुरुपयोग कर रही है। झामुमो के केंद्रीय प्रवक्ता सुप्रियो भट्टाचार्य ने पत्रकारों से बातचीत के दौरान कहा कि चुनाव दो चरणों में होंगे लेकिन एक गेम प्लान के तहत। चुनाव कार्यक्रम यह साबित करता है। इसकी पटकथा असम भवन में लिखी गई थी और मुहर दिल्ली भाजपा मुख्यालय में लगी थी। बता दें कि भट्टाचार्य का असम भवन की ओर इशारा असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा की ओर था, जो कि झारखंड में भाजपा के चुनाव सह-प्रभारी हैं।

झारखंड के बंटी-बबली को हर कोई जानता है : भाजपा

झामुमो के आरोपों पर पलटवार करते हुए भाजपा ने दावा किया कि ईसीआई और केंद्रीय एजेंसियों के खिलाफ इस्तेमाल किए गए अपमानजनक शब्द स्पष्ट रूप से झामुमो की हताशा और निराशा को दिखाते हैं। उन्होंने झामुमो के आरोपों का खंडन करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता हैं और भले ही वह अमेरिका में एक सभा को संबोधित करें, झारखंड के लोग उन्हें सम्मान के साथ सुनेंगे। इसके साथ ही भाजपा ने झामुमो द्वारा भाजपा और चुनाव आयोग को बंटी और बबली कहने पर भी आपत्ति जताते हुए कहा कि झारखंड में केवल एक बंटी-बबली है और हर कोई जानता है कि वे कौन हैं।

डेंगू के बढ़ते प्रकोप के बाद भी अधिकारी बने लापरवाह

सरकटे नाले पर गंदगी का अंबार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। राजधानी में एक ओर डेंगू अपने पैर पसार रहा है। दूसरी ओर अधिकारी लापरवाह बने हुए हैं। खुद मेयर सुषमा खर्कवाल और नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह के नाला सफाई के सख्त आदेशों के बावजूद स्थानीय अधिकारी इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। नतीजतन लोगों को समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ऐसा ही हाल जोन 6 के अंतर्गत आने वाले सरकटे नाले का है। इस नाले में हजारों टन गंदगी और कूड़ा भरा हुआ है। तमाम शिकायतों के बावजूद जिम्मेदार इस ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

स्वच्छता जागरूक अभियान चलाया गया जनता को जागरूक करने के लिए लेकिन गंदगी का अंबार लगा हुआ है सफाई न होने से क्षेत्र के लोगों में डेंगू मलेरिया जैसी बीमारी होने का डर बना हुआ है। नाले की शिकयत पिछले 1 महीने से क्षेत्र की जनता कर रही है पर नगर निगम के अधिकारी उनकी समस्या का समाधान तक नहीं कर पाए अभी तक नगर निगम से शिकयत करने वाले शिकायतकर्ता को सिर्फ आश्वाशन ही मिल रहा है।

भक्तों ने किया मां की प्रतिमाओं का विसर्जन

हाथ में लहराए झंडे और लगाए मां के जयकारे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सुल्तानपुर। कस्बा दोस्तपुर में बुधवार देर रात एक बजे दुर्गा पूजा महोत्सव का समापन हो गया। चौबीस घंटों से अधिक समय तक पैंतीस प्रतिमाएं रथ पर पर सवार होकर नगर भ्रमण पर थी, कस्बे के सभी प्रमुख स्थानों से होकर प्रतिमाएं गुजरी। बुधवार की शाम यात्रा अपनी अंतिम पड़ाव विसर्जन पर पहुंची, शाहीपुल स्थित पोखरे पर लगभग दस बजे रात्रि के आस पास विसर्जन शुरू हुआ जो देर रात एक बजे तक चला।

विसर्जन के दौरान भक्त एवं युवा रात भर जम कर थिरकते रहे। कभी हाथ में झंडा लहराते तो कभी जोर जोर से जयकारे लगाते, ये मां के प्रति भक्तों का प्रेम एवं श्रद्धा ही थी जो भक्तों को थकान की अनुभूति नहीं होने दी। पूरे कस्बे में दर्जनों डीजे की आवाज से पूरा माहौल भक्तिमय हो गया। लेकिन जब बारी मां की विदाई और विसर्जन की घड़ी आयी तो भक्तों की आंखों सिर्फ आसुओं का सैलाब था, भक्तों ने शाहीपुल स्थित पोखरे पर मां की पूजा-अर्चना एवं आरती के उपरांत विसर्जन किया और मां से हाथ जोड़ जोड़कर अनजाने में हुई भूल की छमा याचना करते हुए अगले वर्ष फिर से आशीर्वाद देने आने की अर्जी लगायी।

प्रसाशनिक अमला जमाये रहा डेरा

बहराइच की घटना की वजह से प्रसाशनिक अमला भी मुस्तैद बना रहा खुद आई जी प्रवीण कुमार विसर्जन स्थल पहुंचे और सुरक्षा का जायजा लिया, विसर्जन शुरू होने तक कप्तान सोमेन बर्मा भी दोस्तपुर में बने रहे। अपर पुलिस अधीक्षक अखंड प्रताप सिंह बुधवार सुबह से ही कस्बे में थे। दूसरे जनपदों से भी अपर पुलिस अधीक्षक ट्रैफिक अयोध्या अयोध्या प्रताप सिंह, अपर पुलिस अधीक्षक अम्बेडकर नगर विशाल पाण्डेय एवं सीओ अकबरपुर सिटी की भी तैनाती की गयी। वहीं एस डी एम उतम तिवारी, सीओ कादीपुर विनय गौतम, तहसीलदार घनश्याम भारतीय, नायब तहसीलदार, अधिशाषी अधिकारी पूरे विसर्जन यात्रा के दौरान कस्बे में ही कैंप करते रहे। इन सबके अलावा के अलावा भारी पुलिस बल तैनात रहा।

पहले टेस्ट में भारतीय बल्लेबाजी लड़खड़ाई

आठ साल बाद नंबर तीन पर बैटिंग करने आये कोहली बिना खाता खोले वापस लौटे पवेलियन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेंगलुरु। पहले टेस्ट में भारतीय टीम की बैटिंग ताश के पत्तों की तरह ढह गयी है। बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में खेले जा रहे भारत और न्यूजीलैंड के पहले टेस्ट में टीम इंडिया ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग का फैसला किया। पहले बैटिंग करते हुए भारत ने पहली पारी में लंच तक 34 रन के स्कोर पर 6 विकेट गंवा दिए। रोहित शर्मा महज 2 रन पर आउट हुए। सरफराज खान बिना खाते खोले ही आउट हो गये।

लंच तक गंवाए छह विकेट

वहीं, नंबर-3 पर बैटिंग करने विराट कोहली उतरे। लेकिन किंग कोहली 8 साल बाद टेस्ट में नंबर-3 पर बैटिंग करने आए और उनसे जहां फैंस को उम्मीद थी कि वह बड़ी पारी खेलेंगे, तो वहां वह फैंस का दिल तोड़ते हुए नजर आए। शुभमन गिल की गैरमौजूदगी में विराट कोहली नंबर-3 पर बैटिंग करने उतरे और इस दौरान वह बल्ले से फ्लॉप रहे। कोहली 9 गेंद का सामना करते हुए शून्य पर आउट हुए। वहीं यसस्वी जायसवाल 13 बनाकर आउट हो गये जबकि के एल राहुल भी बिना खाता खोले पवेलियन वापस लौट गये। बता दें कि भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की टेस्ट सीरीज की शुरुआत 16 अक्टूबर से बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम में होनी थी। यह मुकाबला 9:30 बजे से शुरू होना था लेकिन बेंगलुरु में बारिश की वजह से पहले दिन का खेल रद्द करने का फैसला किया गया।

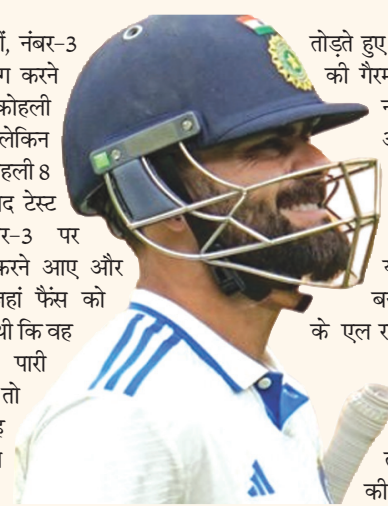

टीम में सरफराज खान-कुलदीप यादव की एंट्री

बेंगलुरु में आज से न्यूजीलैंड के खिलाफ पहले टेस्ट के लिए भारतीय क्रिकेट टीम में बड़ा फेरबदल किया गया है। टीम में इंजर्ड शुभमन गिल को शामिल नहीं किया गया, उनकी जगह सरफराज खान को मौका मिला। वहीं बेंगलुरु के एम चिन्नास्वामी स्टेडियम की पिच स्पिन फ्रेंडली पिच होने के कारण आकाश दीप को भी टीम में जगह नहीं मिली। जगह उनकी जगह कुलदीप यादव को तीसरे स्पिनर के तौर पर शामिल किया गया। दरअसल, आकाशदीप और शुभमन गिल हाल में बांग्लादेश के खिलाफ हुई सीरीज में खेले थे। बाकी टीम लगभग वही है, जो हाल में बांग्लादेश के खिलाफ सीरीज खेलने उतरी थी।

अखिलेश ने महाराष्ट्र चुनाव को लेकर कर दी बड़ी मांग

» सपा अध्यक्ष बोले- भाजपा के अब जाने का समय निकट आ गया है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश गुरुवार को वाल्मीकि जयंती पर उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए उन्हें नमन किया। इस दौरान मीडिया से बातचीत करते हुए अखिलेश यादव ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के जीवन से हमे प्रेरणा लेनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि आज के दिन हम सब संकल्प लेते हैं कि समाज में भेदभाव खत्म हो, समय-समय पर जो ऊंच नीच पैदा होती है, उसको समाप्त किया जाए। अखिलेश यादव ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी को समाज में नफरत फैलाने से फुर्सत नहीं है और अब उनके जाने का समय निकट आ गया है। उन्होंने कहा कि समाजवादी पार्टी अपने विचारों में महर्षि वाल्मीकि के कथनों का अनुसरण करती है। अखिलेश यादव ने कहा कि महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की घोषणा हो चुकी है। राज्य में एक चरण में चुनाव होगा। हरियाणा में हुए विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने सपा को एक भी सीट नहीं दी थी जबकि महाराष्ट्र में सपा के दो विधायक थे तो ऐसे में कयास लगाए जा रहे हैं कि वहां सपा की भागीदारी अब बढ़ेगी।

जहां हमारे दो विधायक थे, वहां अब ज्यादा सीटें मिलेंगी

पूर्व मुख्यमंत्री और सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि मैं कल महाराष्ट्र जाऊंगा जहां हमारी कोशिश होगी कि इंडिया गठबंधन के साथ ही हम विधानसभा चुनाव में उतरें। अखिलेश यादव ने कहा कि हमें उम्मीद है जहां हमारे दो विधायक थे, वहां अब हमें और ज्यादा सीटें मिलेंगी और हम पूरी मजबूती के साथ इंडिया गठबंधन के साथ खड़े होंगे।

अखिलेश देश के इकलौते नेता जिन्होंने मोदी सरकार को घुटने पर ला दिया: सुनील यादव

लखनऊ। अयोध्या की मिल्कीपुर विधानसभा सीट पर हो रहे उपचुनाव को लेकर पूरे देश में राजनीति गर्म है, समाजवादी पार्टी समेत तमाम विपक्षी दल बीजेपी पर हार के डर से चुनाव न कराने के आरोप लगाए हैं। बीजेपी प्रवक्ता ने कहा कि अगर बीजेपी मिल्कीपुर में उपचुनाव नहीं कराना होता तो सीएम योगी इतनी ताकत वहां पर नहीं झोकते, वो लगातार वहां पर प्रचार कर रहे हैं पार्टी डिसीजन ले रही थी। अब ये इस याचिका के बारे में तो मतलब पता ही नहीं था तभी गोरखनाथ बाबा को बुलाया गया। इसका जवाब में सपा प्रवक्ता सुनील साजन ने कहा कि विरासत में आप वकील हो सकते हैं, बुद्धि कहां से लाएंगे बुद्धि तो प्रैक्टिस से आती है, बुद्धि तो पढ़ करके आती है समाज में घूम करके आती है और आप किस नेता पर टिप्पणी कर रहे हैं, आप टिप्पणी कर रहे हैं अखिलेश यादव पर जो इस देश के इकलौते ऐसे नेता हैं जिन्होंने मोदी सरकार को घुटने पर ला दिया है ये पूरा देश जानता है। उस पर बहस का विषय नहीं है। सपा प्रवक्ता ने कहा कि आपने केवल धार्मिक स्थलों की बात रखी है। कोई जीतेगा, कोई हारेगा. लेकिन अयोध्या इसलिए महत्वपूर्ण है कि बीजेपी का कुल मुद्दा चुनावी मुद्दा भगवान राम का मंदिर रहा है।

नायब सिंह सैनी फिर बने हरियाणा के सीएम

» मंच पर दिखा एनडीए का पावर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हरियाणा। नायब सिंह सैनी ने एक बार फिर हरियाणा के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ले ली है. नायब सिंह सैनी के साथ उनकी कैबिनेट के मंत्रियों ने भी शपथ ली है. नायब सिंह सैनी ने लगातार दूसरी बार हरियाणा के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली है।

शपथ ग्रहण समारोह के मौके पर पीएम मोदी, गृहमंत्री अमित शाह, केंद्रीय रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और केंद्रीय मंत्री नितिन गड़करी समेत भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) के कई वरिष्ठ नेता भी मौजूद रहे। इस मौके पर बीजेपी शासित राज्यों के मुख्यमंत्री भी मौजूद रहे। नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन पंचकूला के दशहरा मैदान में किया गया। नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण के मौके पर हरियाणा बीजेपी के वरिष्ठ नेता और अंबाला कैंट से विधायक अनिल विज ने भी कैबिनेट मंत्री के तौर पर शपथ ली। नायब सिंह सैनी के शपथ ग्रहण समारोह में पीएम मोदी, अमित शाह, राजनाथ सिंह, मनोहर लाल खट्टर समेत बीजेपी के कई नेता शामिल थे। इसके अलावा कई राज्यों के सीएम और पार्टी के वरिष्ठ नेता भी मंच पर मौजूद थे। इसके लिए पंचकूला में सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। नायब सिंह सैनी दूसरी बार हरियाणा के सीएम बने हैं। इससे पहले 12 मार्च 2024 को वह पहली बार हरियाणा के मुख्यमंत्री चुने गए थे।

गोमती नगर में बारिश में महिला से हुई छेड़छाड़ मामले में पांच पुलिसकर्मी दोषी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। अगस्त में गोमती नगर इलाके के अंबेडकर पार्क के पास जलभराव में युवती से छेड़छाड़ के मामले में निलंबित पांच पुलिसकर्मी दोषी पाए गए हैं। जांच रिपोर्ट उच्चाधिकारियों को भेज दी गई है। इसी के आधार पर अब आगे की कार्रवाई की जाएगी। एडीसीपी ईस्ट पंकज कुमार सिंह ने बताया कि जांच में दोषी पुलिसकर्मियों की लापरवाही सामने आई है।

घटना के बाद तत्कालीन गोमती नगर दीपक कुमार पांडेय, दारोगा ऋषि विवेक, दारोगा कपिल, सिपाही धर्मवीर और वीरेंद्र को निलंबित किया गया था। रिपोर्ट के आधार पर अब विभागीय दंड निर्धारित किया जाएगा। वहीं, मामले में गिरफ्तार आरोपियों के खिलाफ पुलिस जल्द ही चार्जशीट दाखिल करेगी। बीती 5 अगस्त को मरीन ड्राइव के पास सड़क पर पानी भर गया था। इस जलभराव में करीब 40-50 अज्ञात युवक इकट्ठे हो गए थे और उन्होंने उत्पात मचाना शुरू कर दिया था।

राहुल देश में गृह युद्ध कराना चाहते हैं : गिरिराज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बेगूसराय। हिन्दू स्वाभिमान यात्रा पर निकलने से पहले केंद्रीय मंत्री और बेगूसराय के सांसद गिरिराज सिंह और अधिक आक्रामक हो गए हैं। गिरिराज ने राहुल गांधी पर बड़ा हमला बोलते हुए कहा कि वे देश में गृह युद्ध कराना चाहते है, इसलिए वो हल्की बाते करते रहते हैं, वो कानून को नहीं मानते है।

केंद्रीय मंत्री ने यात्रा को लेकर कहा कि यह किसी पार्टी की यात्रा नहीं है। न तो बीजेपी और न ही जदयू को इस यात्रा से कोई मतलब है। हिंदुओं को जगाने के लिए हिंदू स्वाभिमान यात्रा निकाली जा रही है। बता दें, गिरिराज सिंह की हिन्दू स्वाभिमान यात्रा को लेकर पहले जहां जेडीयू ने सवाल उठाते थे। वहीं अब बिहार बीजेपी अध्यक्ष समेत अन्य नेताओं ने भी इस यात्रा से किनारा कर लिया है।

फोटो :4 पीएम

धरना अखिल भारतीय कुलियों के प्रतिनिधियों की हुई बैठक में अलग-अलग शहरों से आये कुलियों के प्रतिनिधियों ने लिया हिस्सा।

मंत्री दिनेश के खिलाफ कांग्रेसियों ने खोला मोर्चा

पुलिस ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी पर प्रदेश सरकार के मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के बयान का मामला तूल पकड़ता जा रहा है। गुरुवार को एनएसयूआई कार्यकर्ताओं ने हजरतगंज चौराहे पर मंत्री दिनेश शर्मा के पोस्टर पर कालिख पोतकर अपना गुस्सा जाहिर किया। एनएसयूआई प्रदेश महासचिव मध्य क्षेत्र आर्यन मिश्रा की अगुवाई में कांग्रेस के युवा कार्यकर्ताओं ने मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

बता दें कि मंत्री दिनेश प्रताप सिंह ने प्रियंका गांधी के खिलाफ अशोभनीय टिप्पणी की थी जिसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं में मंत्री के खिलाफ भारी आक्रोश है। इसी के चलते गुरुवार को एक बार फिर कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने मंत्री के खिलाफ जमकर प्रदर्शन किया। भाजपा के मंत्री दिनेश प्रताप सिंह के पोस्टर पर कालिख पोतने के मामले में प्रदर्शन कर रहे एनएसयूआई कार्यकर्ताओं को पुलिस ने हिरासत में ले लिया। इस दौरान प्रदर्शनकारियों ने दिनेश प्रताप सिंह के खिलाफ जमकर नारे लगाए।

मंत्री पर जबरदस्त बिफरी सुप्रिया श्रीनेत

मंत्री दिनेश प्रताप सिंह का प्रियंका गांधी पर की गई टिप्पणी को लेकर कांग्रेस की राष्ट्रीय प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने भी मंत्री पर पलटवार करते हुए कहा कि बीजेपी के बड़बोले मंत्री और राहुल गांधी जी के सामने करारी हार झेल चुके दिनेश प्रताप सिंह ने जो प्रियंका गांधी जी के लिये जो अनुचित शब्द बोले हैं, वो कहीं न कहीं बीजेपी का असली चाल, चरित्र और चेहरा है जो एक बार फिर दिखा है। बीजेपी में कुलदीप सिंह सेंगर, बृजभूषण शरण सिंह और अब दिनेश प्रताप सिंह जैसे लोगों की वजह से ही बीजेपी महिला विरोधी होती जा रही है। रायबरेली में जो आपकी करारी हार हुई है उससे आप उबर नहीं पा रहे हैं ये बयान उसी की कुंठा को प्रदर्शित करती है। चुनावी हार से उबरिये और महिलाओं की इज्जत करना सीखिए, आप सार्वजनिक जीवन में जीने लायक इंसान नहीं है, आप घटिया इंसान हैं।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार : सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार : संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट : हसन जैदी, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।